दीवाना

अंक: 3 वर्ष: 17 1 फरवरी 1981

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

मुख्य पृष्ठ पर

कुत्ते की दुम टेढ़ी क्यों है
यह सोच-सोच घबराता था
अब अपनी दाढ़ी देख-देख
दिल मुँह को आ जाता है
मेरी कोठी के कोठे पर
वह भौं-भौं कर चिल्लाता है
मैं ठण्डी आहें भरता हूँ
वह गीत खुशी के गाता है।

आगामी अंक में

कुछ बजट सुझाव

किंगसाइज सिक्के

मुफ्त के मजे
कितने महंगे पड़े

मुफ्त पोस्टर
अमिताभ बच्चन

आपके पत्र

दीवाना के स्थाई कलाकारों मोटू पतलू ने हंसा हंसा कर लोट-पोट कर दिया। सिलबिल पिलपिल रोचक था। दीवाना का अंक १८ बहुत ही मनोरंजक था।

सवाल यह है, जलते दीवाने सवाल, नम्बर दो के दोहे, स्वैटरों के अनूठे डिजाइन रोचक लगे। स्तम्भ क्यों और कैसे तथा पंचतंत्र बहुत ही ज्ञानवर्धक लगे। हास्य व्यंग फीचर धंधा पाकेटमारी का वास्तविकता को दर्शाने वाला था

अगले अंक की बेसब्री से इन्तजार में।

सुरजीत सिंह लाम्बा—फरीदाबाद

बड़ी बेसब्री के पश्चात् दीवाना अंक १८ मिला। विश्वास कीजिये बहुत ही सुन्दर लगा। मुझे सब से ज्यादा पसन्द आज की ताजा खबर, जलते दीवाने सवाल नम्बर दो के दोहे अच्छे लगे। फैन्टम ने तो दीवाने को और भी रोचक बना दिया है।

नया धारावाहिक उपन्यास चमकती आँख और तीन जासूस बहुत ही रोचक है, आशा है भविष्य में भी ऐसे ही रोचक उपन्यास आप देते रहेंगे।

मोटू पतलू और खेल के मैदान में जो छपा उसका तो जवाब ही नहीं। इतने सुन्दर अंक के लिये धन्यवाद!

मो० इब्राहीम चौधरी—बिजनौर

दीवाना अंक १८ प्राप्त हुआ, सारा का सारा रोचक सामग्री से भरपूर था। मोटू पतलू फैन्टम, सिलबिल पिलपिल स्थायी स्तम्भ बहुत पसन्द आये।

दीप छाबड़ा—मोती नगर

कक्षा में शोर मचाइये

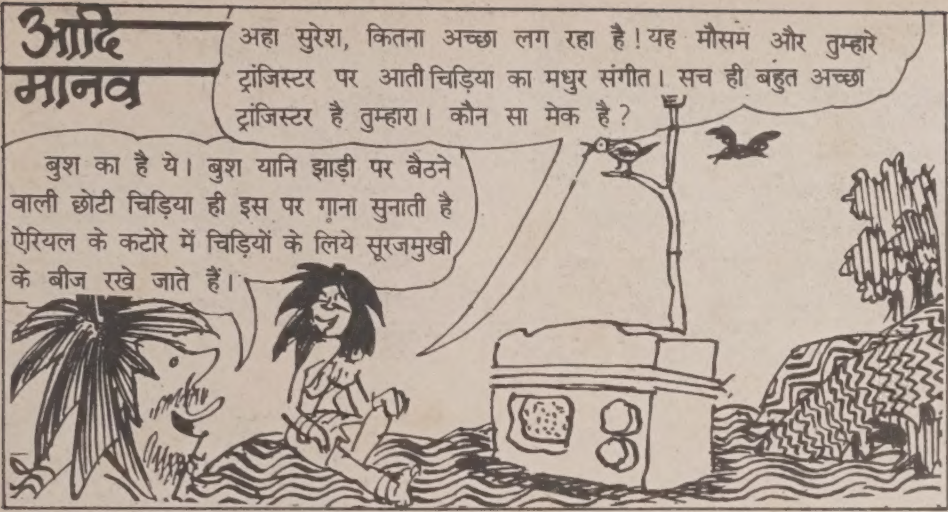
यह बहरे और गूंगों की कक्षा नहीं है

दीवाना

घूस खाइये

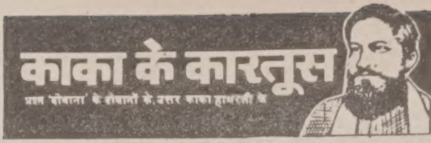
इससे पेट खराब नहीं होता

दीवाना


आदि मानव
अहा सुरेश, कितना अच्छा लग रहा है ! यह मौसम और तुम्हारे ट्रांजिस्टर पर आती चिड़िया का मधुर संगीत। सच ही बहुत अच्छा ट्रांजिस्टर है तुम्हारा। कौन सा मेक है ?
बुश का है ये। बुश यानि झाड़ी पर बैठने वाली छोटी चिड़िया ही इस पर गाना सुनाती है ऐरियल के कटोरे में चिड़ियों के लिये सूरजमुखी के बीज रखे जाते हैं।


यह तो कुछ भी नहीं है डार्लिंग। भैय्या पिछले दिनों सुअर का शिकार करने जापान के जंगल में गये थे। वहां के जंगलियों ने इस ट्रांजिस्टर से भी अच्छी चीज़ बना डाली है। तुम देखोगी तो हैरान रह जाओगी। उसके सामने तो हमारा यह ट्रांजिस्टर कुछ भी नहीं है।
चलो मुझे भी दिखाओ कैसी चीज़ है। चलें ?


यह देखो इसे टू इन वन कहते हैं। इसमें रिकार्डिंग का भी प्रबन्ध है। सामने तोते को रखने का अलग प्रबन्ध है, ऊपर चिड़िया आकर जो गाना सुना जाती है तोता बाद में उनकी नकल कर गाना दोबारा सुनाता है। आदमियों की बातचीत की नकल उतारने में भी माहिर है यह !
टू-इन-वन !



गोपाल खंडेलवाल, जबलपुर

प्र० आपकी कविताएँ हास्य-व्यंग्य की ऊँचाइयों को छू रहीं हैं इसका रहस्य?

उ० धरती पर नित हो रहे, लूटपाट, हुरदंग।
आसमान में उड़ रहे, काका कवि के व्यंग।।

संजय अरोरा, अहमद गंज, फतेहपुर

प्र० काकाजी, आप भगवान् से क्या प्रार्थना करते रहते हैं?

उ० पुष्प, चंदन और तुलसी आप सब ले लीजिए।
सौ रूपे के नोट जितने हों, मुझे दे जीजिए।।

कुमार ललित भारती, नई दिल्ली

प्र० ललित नहीं कर पावै, जो काका कर पावै।
टेढ़े-मेढ़े उत्तर देकर सबहिं हँसावै।।

उ० इस कलियुग में सीधा मानस मूर्ख कहावै।
इसीलिए काका कवि टेढ़ी कलम चलावै।।

बलीराम धर्मानी 'दीपु', रायपुर

प्र० महफिल जमी थी, तो सभी मेहमान वहाँ थे,
ना जाने उस समय हजूर आप कहाँ थे।

उ० महफिल में लोग व्यर्थ की गप्पें लड़ा रहे।
हम लड्डु, कचौड़ी व रसगुल्ले उड़ा रहे।।

ईश्वर दयाल, सिविल लाइन, इलाहाबाद

प्र० हिंसा करना पाप है, फिर भी शिकारी, शिकार क्यों करता है?

उ० सोने का मृग मारने, भागे थे श्री राम।
इसीलिए तो शिकारी, करते यह शुभ काम।।

आशीष कुमार रजक, पानागढ़ (बर्दवान)

प्र० गाड़ी से गाड़ी टकराने पर एक्सीडेंट होता है, दिल से दिल टकराए तो?

उ० गाड़ी एक्सीडेंट में, भरते हैं सब आह।
दिल से दिल टकराय तो, हो जाता है ब्याह।।

प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीरजी

प्र० उल्लू और गधे में क्या फर्क है काका?

उ० मूरख दोनों ही रहे, घायल हो गई पीठ।
उल्लू पर लक्ष्मी लदे, गदहा ढोवे ईंट।।

एम. एम. गुजराल, मोहनलाल शर्मा, करनाल

प्र० आप बीच-बीच में 'दीवाना' छोड़ कर गायब क्यों हो जाते हैं?

उ० 'दीवाना' कब छपेगा, करते रहते वेट।
वह हो जाता लेट तो, हम भी होते लेट।।

सैफउद्दीन मुकाद्दम, मंदसौर

प्र० प्रश्नों के उत्तर आप लिखते हैं या दूसरों से लिखवाते हैं?

उ० प्रश्नों को पढ़ फड़कते, काकीजी के नैन।
उत्तर काका से मिले, लिख देता है पैन।।

विनोदपुरी रंजु, लुधियाना

प्र० जीवन में मनुष्य कभी-कभी बेबस क्यों हो जाता है?

उ० तंत्र-मंत्र-तावीज सब फेल करे भगवान्।
राजनारायण की तरह बेबस हो इंसान।।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-वी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.



प्रतियोगिताओं के परिणाम

अंक १९ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

जे	ल	के	सीं	ख	चे
ठ		ला	ग		च
का	ग		मा	सि	क
म	ज	दू	र		
ही	रा		बै	सा	खी
ना		ग	ल	ग	ल

विजेताः गुलशन पामर, आजाद भवन, मुक्तसर

अंक २० में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

घा	व	कु	रे	द	ना
घ		एँ		म	र्म
	अ	का	ली	द्र	ल
ना	क	में	द	म	
ह		ढ़			ना
क	स	क	उ	ठ	ना

विजेता—प्रमोद कुमार केड़िया, ५१/२, रामकृष्ण पुर लेन, हौज-१ (वैस्ट बंगाल)

हमें खेद है कि दीवाना के अंक १८ में प्रकाशित **"पहचानिये प्रतियोगिता"** का सही हल किसी भी पाठक ने नहीं भेजा।

सही हल—वह दृश्य **"आंगन"** फिल्म का था।

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहे, परिवार का सुख सहयोग, आत्मविश्वास दृढ़, यात्रा सफल, झगड़े आदि से बचें, छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा, अशुभफलों में कमी और शुभफलों में बढोतरी होगी।

वृष : नौकरी/व्यवसाय में नरमी, परिश्रम द्वारा सफलता, घरेलू झंझट होंगे, आय-व्यय में समानता रहेगी, व्यर्थ बातों में बैठने से परेशानी होगी, अन्य हालात सुधरेंगे, कारोबार में दृढ़ता रहेगी, शुभकार्यों से मन दूर भागेगा।

मिथुन : घरेलू हालात से मन परेशान, यात्रा सफल, लाभ तो होगा किन्तु खर्चा भी साथ साथ रहेगा, रोज़गार-धन्धों से लाभ बढ़ेगा, मशीनरी आदि पर व्यय, मनोरंजन आदि पर व्यय, आय आशा अनुसार।

कर्क : कामधन्धों में रुकावट और परेशानी भी बनेगी, सेहत नरम, लाभ भी पूरा न मिलेगा, मित्र मदद करेंगें, रोज़गार की स्थिति सुधरेगी, आर्थिक दशा भी अनुकुल रहेगी, यात्रा सफल रहेगी, कामकाज से अच्छा लाभ।

सिंह : व्यय अधिक परन्तु कार्यों में सफलता मिलने से खुशी होगी, कारोबार से अच्छा लाभ मिलगा, कामधन्धे की परेशानी, आर्थिक लाभ भी देर से मिलेगा, यात्रा में कष्ट, मित्रों से मन-मुटाव रहेगा, परिवार का सुख सहयोग।

कन्या : आय व्यय में समानता, नातेदारों से मेल जोल, कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा करनी पड़ सकती है, कारोबार ठीक चलेगा पर आर्थिक लाभ देर से मिलेगा, घरेलू व्यय ज्यादा, मित्रों से मदद मिले, दिन ठीक नहीं।

तुला : स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहे, परिश्रम भी काफी करना पड़ेगा, राजकाज में सफलता, कारोबार में दृढ़ता, यात्रा लाभप्रद, शुभफलों में वृद्धि, मशीनरी एवं घरेलू कामों पर खर्चा ज्यादा होगा, रुकावटों पर विजय।

वृश्चिक : शुभफलों का संचार होने के बावजूद भी मानसिक परेशानी रहेगी, व्यय अधिक, आय यथार्थ, परिश्रम करने पर सफलता, शत्रु एवं रुकावटों पर विजय, फिर भी सावधान रहना, कारोबार से लाभ बढ़ेगा।

धनु : परिश्रम काफी करना पड़ेगा, सफलता भी मिलती रहेगी, परन्तु व्यर्थ बातों में न बैठें, यात्रा सफल, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, खर्चा आमदनी से ज्यादा होगा, भाग्य सहारा देगा, हालात ठीक होंगे।

मकर : व्यय की अधिकता से परेशानी, परन्तु आर्थिक सहायता मिलने से काम समय पर बनते रहेंगें, यात्रा सफल होगी, शुभकार्यों पर व्यय, कारोबार में दृढ़ता, समय अच्छा गुज़रेगा, आर्थिक दशा डांवाडोल,।

कुम्भ : कोई विशेष समाचार मिले, विशेष व्यय होने से परेशानी, नौकरी/व्यवसाय में नरमी, रुकावटें दूर होंगी, सफलता मिलती रहेगी, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, कारोबार ठीक चले, घरेलू कामों में व्यस्तता।

मीन : व्यर्थ बातों से मन परेशान, लाभ भी आशा से कम, खर्चा बढ़ेगा, यात्रा न करें तो अच्छा है, हालात सुधरने लगेंगें, आर्थिक दशा भी पहले से ठीक रहेगी, व्यय यथार्थ, आय आशा अनुसार, व्यवसाय की स्थिति नरम।

लघु उद्योग सुधारस भीने

—डॉ. राम सिया सिंह

गरुड़ जी ने कागभुसुंड से कहा—"महाज्ञानी,

आप चर-अचर तीनों लोकों की और तीनों कालों की घटनाओं का मर्म जानने वाले हैं। कृपा करके मुझे भारत नामक देश की कुछ बातें बताइये। सुना है, भारत देश इस समय लघु उद्योगों के क्षेत्र में बड़ी तरक्की कर रहा है।"

कागभुसुंड ने अपने पंख फुलाये, इधर-उधर अपनी नज़रें घुमाइ, श्रोतामंडली को एक नज़र देखा, मंद-मंद मुस्कराये और फिर अपने मुखारबिन्द को फैलाकर हर्षित होकर कहने लगे—"पक्षिराज, आपका कौतूहल स्वाभाविक है। वर्तमान समय में भारत देश की तरक्की अनगिनत क्षेत्रों में हुई है, मगर लघु उद्योगों के क्षेत्र में उसकी तरक्की तो बेमिसाल है।"

"बायसराज, जरा विस्तार से समझाने की कृपा करें।" गरुड़ महाराज बोले।

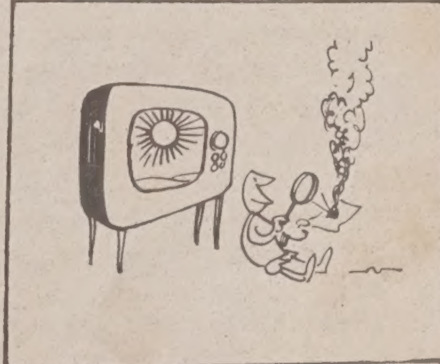
कागभुसुंड ने पुनः श्रोताओं पर एक नज़र फेरी और कहने लगे—"खगराज, भारत देश की बेकारी से त्रस्त लोगों ने रोजगार के सहस्रों साधन भागीरथ प्रयत्न करके ढूँढ़ निकाले हैं। इन लघु उद्योगों का प्रसार तो आज कोने-कोने में हो गया है। सबसे महिमामय लघु उद्योग को कुछ भक्तगण मटका, कुछ सट्टा, कुछ वरली और कुछ अपने ही ढंग से दुलार भरा नाम दे देते हैं। अन्य उद्योगों में जहाँ सवा गुने या डेढ़-दो गुने लाभ की ही गुंजाइश है, इस संकटमोचक उद्योग में धन सैकड़ों गुना होकर तत्काल फल देता है। फिर व्यापारी हो या खरीददार, सरकारी नौकरी वाला हो या गैरसरकारी नौकरी वाला, अध्यापक हो या विद्यार्थी, नेता हो या अभिनेता, पैसे वाला हो या बिना पैसे वा.., .. उद्योग सबको समदृष्टि से देखता है। इसीलिये मटका देव की अराधना भारत देश के हर वर्ग और तब के लोग बिना किसी ना-नुकुर के करते रहते हैं। यदि इस उद्योग की यही रफ्तार रही तो एक दिन ऐसा आ सकता है जब राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री जैसे बड़े पदों पर उसी को आसीन किया जाय जो मटका का सर्वोच्च खिलाड़ी हो।"

"बायसराज, इस उद्योग में बेईमानी की तो गुजांइश हो सकती है।"

"नहीं, खगराज, नंबर दो के जितने भी लघु या कुटीर उद्योग हैं, उनमें बेईमानी या दगाबाजी की कोई गुंजाइश ही नहीं है। ईमानदारी ही तो इस उद्योग के पल्लवित-पुष्पित होने का मुख्य राज़ है। आप भी जब चाहें, बेखटके इस उद्योग से लाभान्वित हो सकते हैं। पट्टी लिखने वाले से लेकर पुलिस वाले तक—सभी को यह उद्योग कृतार्थ करने में पीछे नहीं रहता।"

गरुड़ ने पुनः पूछा—"पूज्य बायसराज, आपका कुल तो 'काँव-काँव' की मधुर ध्वनि से निरन्तर गुंजारित होता रहता है, किन्तु मर्त्यलोक में और विशेष कर भारत देश में इस मधुर ध्वनि को सुनने के लिये तो लोग लालायित रहते होंगे, क्योंकि आप तो प्रायः सुरपुर में ही वास करने लगे हैं।

"नहीं पक्षिराज, आपका अनुमान सही नहीं है। भारत देश में विधानसभायें और संसद न केवल निरन्तर 'काँव-काँव' की मधुर ध्वनि से झंकृत होती रहती है, अपितु उनमें कुर्सी फेंकने, मुक्का मारने, गालियाँ बकने, पैंतरेबाज़ी, धमाचौकड़ी आदि के मनोहारी दृश्य प्रायः दर्शक दीर्घा में बैठे



लोगों का मन मोह लेते हैं और वे रसविभोर हो जाते हैं। किसी नौटंकी, रामलीला मंडली, रासलीला, सरकस आदि में भी ऐसे स्वाभाविक दृश्य दुर्लभ ही समझें, महाराज!''—बायसराज ने खगराज को भेदभरी दृष्टि से देखते हुये कहा।

खगराज को किंचित् आश्चर्य हुआ—''हे महापंडित बायसाधिपति, आपने तो कुटीर उद्योगों की महिमा का ही बखान करने को कहा था, मगर इसमें कुटीर उद्योग वाली कोई बात तो मेरी समझ में नहीं आई?''

''भाई वाह, आप इतना भी नहीं समझ पाये, पक्षिराज! गांधी बाबा के खादी के कुटीर उद्योग में कोई दिन भर हाड़ तोड़े तो कहो तो दस-पाँच रुपये कमा ही ले। खिलौने वाला, पटाके वाला, टोकरी वाला या ऐसी ही नीरस कुटीर उद्योगों वाला कोई उद्यमी दस-बीस रुपये ही कमा कर दिन बिता देता है, मगर हजारों—लाखों का वारा-न्यारा दो-चार दिनों में करने वाला यह नेता—उद्योग अन्य किसी भी कुटीर उद्योग को मात करने वाला अत्यधिक सरस कुटीर उद्योग है। मंत्री हो या विधायक, किसी का तबादला हो या प्रमोशन, सड़कों की मंजूरी हो या नल की, बिल्ली से लेकर दिल्ली तक पहुँच का कोई भी काम हो—आप बखूबी करवा सकते हैं। इसीलिये इस कुटीर उद्योग का आज भारत देश में व्यापक प्रसार हो गया है। हर्रा लगे न फिटकरी, रंग चोखा आवे'—ऐसा उद्योग नेता—उद्योग ही है, पक्षिराज।''

पक्षिराज हर्षित होकर पंख फुलाकर फिर पूछने लगे—''प्रियदर्शी बायसराज, भारत देश में क्या कोई और उद्योग भी है?''

''हाँ पक्षिराज, भारत में पानी बेचने का उद्योग भी बहुप्रचलित है, बस ज़रूरत है क्रि शगुन के लिये थोड़ा सा दूध भी उसके साथ मिला लिया जाय।''

''और?''

''दो चार मूर्तियां रखकर फूल-माला सजाकर किसी भी तीर्थधाम में बैठ जाइये, रोजी-रोटी पकाने के लिये पर्याप्त है। इस उद्योग के लिये कर्मकाण्ड में लोक-परलोक, जन्म-पुनर्जन्म, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नर्क आदि के हजारों नुस्खे भरे पड़े हैं, महाराज।''

''और कोई लोकप्रिय उद्योग हो तो कृपा कर उस पर भी प्रकाश डालिये महाराज।''

''हे पक्षिराज, दलाली नामक एक बहुप्रचारित लोकप्रिय उद्योग किसी की भी अलाली को क्षणमात्र में भगा देता है। चाहे मंत्री जी की दलाली हो या विधायक जी की; चाहे सेठ जी की दलाली हो या मुनीम जी की; चाहे पंडा जी से संबंधित हो या मिट्टी का तेल दिलाने की; चाहे मकान की बिक्री की दलाली हो या प्लाट की; हर क्षेत्र में दलाल की सेवायें उपलब्ध हो सकती हैं।''

''अच्छा!''

''और हाँ पक्षिराज, 'चमचा' नामक उद्योग तो आज इस देश के बच्चे-बच्चे की जुबान पर है। किसी भी बड़े नेता या अभिनेता का चमचा बन जाइये, फिर दिनरात पौ बारह ही समझिये। आपकी गति से भी अधिक तेज चमचाकी पहुँच होती है महा-राज! चमचा उद्योग से हर मुश्किल बड़ी आसानी से आसान हो जाती है। किसी पुराने लकीर के फकीर ने कहा था—

''उद्यमेन हि सिध्यंति कार्याणि न मनोरथैः।''

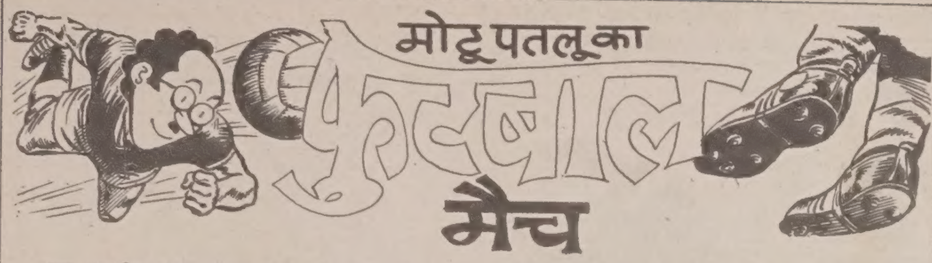
सो हे पक्षिराज, इसे यों कहना ही अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होता है—

''चम्मचेन हि सिध्यंति कार्याणि न मनोरथैः।''

मन के लड्डु खाने से नहीं, बल्कि चमचा बनने से ही दुष्कर कार्य सिद्ध हो सकते हैं। हे पक्षिराज, भारत देश में कामधेनु सरीखे ऐसे ही अनगिनत लघु उद्योग हैं। पुराने बड़े वेदशास्त्रों को भी इन्हें 'नेति-नेति' कहकर चुप हो जाना पड़ेगा। और महाराज, अधिक क्या कहें—

लघु उद्योग सुधारस भीने।
दुग्ध स्रवहिं बारहों महीने।।
अवस देखिये देखन जोगू।
संकटमोचक लघु उद्योगू।।

मोटू पतलू का फुटबाल मैच



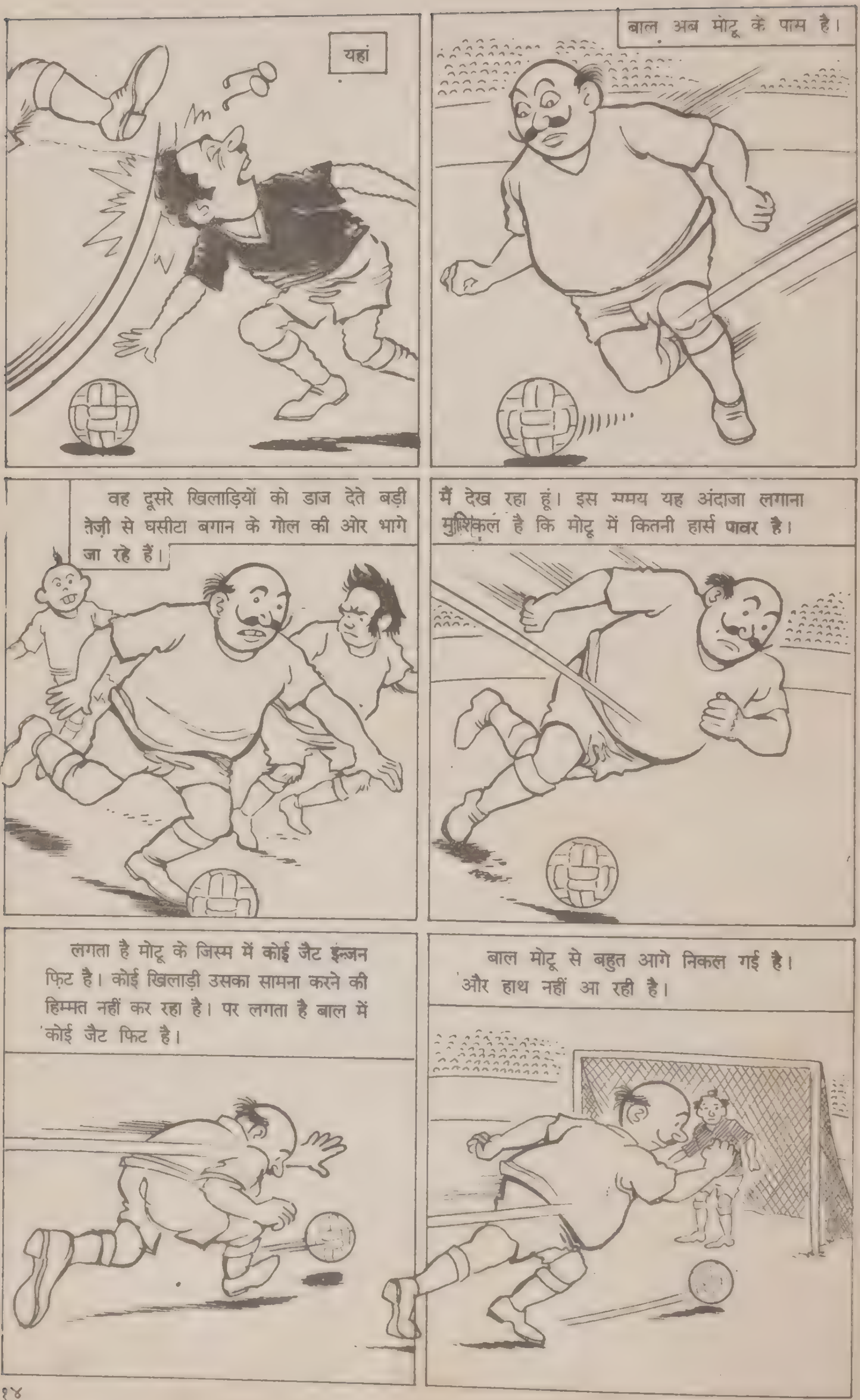
एक बार फिर हमारे जोकर खेल की दुनिया में नाम कमाने के लिये फुटबाल के मैदान में उतरे हैं. इस से पहले कि डयूरेंड फुटबाल टूर्नामेंट या किसी अन्य मैच में इनका मुकाबला मोहन बगान, वि० एस० एफ़०, वेस्ट बंगाल, हीरो अम्बाला, डी० सी० एम०, या मफ़त लाल ग्रुप से हो। इन्होंने अपनी दो टीमें बना कर प्रैक्टिस शुरू कर दी है. एक टीम का नाम है घसीटा बगान। इस में जूड़ो मास्टर और चेला राम हैं। और दूसरी टीमों के चुने हुये खिलाड़ी भी इस टीम में आ गये हैं. दूसरी टीम का नाम है मोटू लाल ग्रूप। इस टीम में है मोटू-पतलू और डाक्टर झटका। फुटबाल की दूसरी टीमों के छटे हुये खिलाड़ी इस टीम में भी आ मिले हैं।





घसीटा राम ने अपने ही खिलाड़ी की टांग में टंगड़ी अड़ा कर उसका कबाड़ा कर दिया है।
बेड़ा ग़र्क हो गया।
अपने खिलाड़ी अपने ही साथियों के हाथ पांव तोड़ने पर तुले हुये हैं।
वह मारा
मजा आ गया
बाल अब मोटू लाल ग्रुप के घोड़ा पछाड़ सिंह के पास है।
शाबाश।
घोड़ा पछाड़ सिंह ने ज़ोरदार हिट मारी है। पर दूसरी टीम के खिलाड़ी ने मोटू को धक्का देकर बाल के आगे कर दिया है।
गोल करो।
वेरी गुड।
THWAPP!
और इस तरह यह गोल बचा लिया है।
मोटू लाल ग्रुप को पैनलटी कार्नग मिला है।
बाल बहुत ऊपर उठ गई है।


और उसके साथ ही उठ गये हैं मोटू लाल ग्रुप के दो खिलाड़ी.
मैं देख रहा हूं। बाल उनके सरों से बाल बाल बच गई है और उनके सरों का बैंड बजा गई है।
गोल बचने की खुशी में घसीटा बगान के खिलाड़ी खुश हैं।
फ्री हिट मिली है घसीटा बगान को। हिट लगा रहे हैं जूड़ो मास्टर। और बाल रख रहे हैं घसीटा राम।
जूडो मास्टर ने हिट लगाई। पर यह तो अनुमान लगाइये कि कहां ?



यहां
बाल अब मोटू के पास है।
वह दूसरे खिलाड़ियों को डाज देते बड़ी तेज़ी से घसीटा बगान के गोल की ओर भागे जा रहे हैं।
मैं देख रहा हूं। इस समय यह अंदाजा लगाना मुश्किल है कि मोटू में कितनी हार्स पावर है।
लगता है मोटू के जिस्म में कोई जैट इन्जन फ़िट है। कोई खिलाड़ी उसका सामना करने की हिम्मत नहीं कर रहा है। पर लगता है बाल में कोई जैट फिट है।
बाल मोटू से बहुत आगे निकल गई है। और हाथ नहीं आ रही है।


ओफ़्फ़ो, गज़ब हो गया। बाल गोल से बाहर निकल गई और मोटू गोल के अन्दर हो गया।
इस तरह एक खूबसूरत गोल होते-होते रह गया। जो बदसूरत हुआ उसे आप देख ही रहे हैं।
इस बात पर अब घसीटा बगान के खिलाड़ी चेला राम को ताव आया है। यह चेला राम ने गेंद में हिट मारी ......
और यह, गोल्ल!
गोल्ल।
गोल्ल।
यह क्या चक्कर है? बाल मैंने लपक ली फिर गोल कैसे हो गया?
एक गोल के बाद अब मोटू लाल ग्रुप के खिलाड़ियों को ताव आया है। और पतलू ने एक ऊंची हिट जमायी है।


पर घबराईये नहीं इस बाल को सम्भालने के लिये जूड़ो मास्टर का सर तैयार है।
आप ने देखा इन्होंने किस खूबसूरती से बाल को अपने सर पर सम्भाला है।
खेल पल भर के लिये रुक गया है। बाल को सर पर किस तरह सम्भाला इसके बारे में मैं जूड़ो मास्टर से प्रार्थना करूंगा कि यह अपने मुँह से कुछ बतायें। यह हैं आपके सामने . . .
ज . . . ज . . . जूड़ो मास्टर। अरे यह तो फुटबाल मास्टर है।

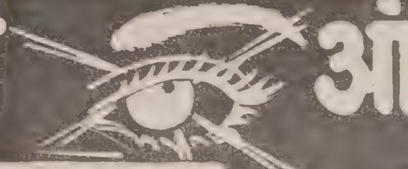


अरे इसका सर कहां गया?
जिस्म के अन्दर घुस गया है। चलो, इसे भी मेरे अस्पताल भेजो। सर औज़ारों से खींच कर बाहर निकालना पड़ेगा।
खेल अब फिर शुरू हो गया है। डाक्टर झटका ने एक जोर दार हिट मारी है। घसीटा राम की नाक तोड़ती हुई बाल गोल के अन्दर घुस गई है।
लीजिये, रेफ़री की सीटी बजी और खेल समाप्त हुआ। एक, एक गोल से खेल बराबर रहा। पर नुक्सान में दोनों टीमें बराबर नहीं हैं। अब तक दोनों टीमों का एक-एक खिलाड़ी अस्पताल पहुंच चुका है।
पर घसीटा राम ने अपनी नाक तुड़वा कर अपनी टीम का स्कोर आगे बढ़ा लिया है।
चलो इसे भी ले चलो अस्पताल। आप्रेशन कर के इसकी नाक जोड़ दूंगा।
डाक्टर झटका अपने अस्पताल के आप्रेशन थेटर में आप्रेशन से पहले हाथ धो रहे हैं।
अरे यहां से टूटी कहां गई?
निकल गई है।
कोई बात नहीं।
अब ज़रा शांत रहिये। अपने-अपने भगवान को याद कीजिये। डाक्टर झटका टूट-फूटे खिलाड़ियों का आप्रेशन कर रहे हैं। आप्रेशन के बाद इन खिलाड़ियों की मिज़ाज़ पुर्सी के लिये छः दिन बाद तशरीफ़ लाइये।



आगामी अंक में इन कलाकारों से फिर मिलिये।

चमकती आंख और तीन जासूस



ले. प्रेत नाथ
भाग - ७

एक काली गाड़ी घर के भीतर आई और एक आदमी उसमें से उतरा। आदमी को देख कर श्याम घबराया।

ये आदमी मंझले कद का, काले बालों वाला, काला चश्मा लगाये तथा काली बड़ी मूछों वाला था ''काली मूंछों वाला'' यहां।

'नमस्कार' काली मूंछों वाले ने मिसेज माथुर से कहा,'मैं इन कलात्मक मूर्तियों में जो आपने यहां सजा रखी हैं की खरीद में रुचि रखता हूं जो बड़े प्रसिद्ध लोगों की हैं, क्या आपके पास और भी हैं ।'नहीं , केवल यही हैं, मुझे खेद है, मैं इन्हें बाग में सजाने के लिये नहीं बेच सकती, क्योंकि धोने से ये टूट जाती हैं । वास्तव में दो ऐसी प्रतिमाऐं तो अभी किसी ने वापिस की हैं और मेरे ख्याल से बाकी सब भी वापिस आ ही जायेंगी,' वो कुछ परेशान दिखाई दे रही थीं, पैसे वापिस करने में मि० माथुर सदा ही दुखी हो जाया करती थीं। वह बड़े दिल वाली तथा दययावान थीं परन्तु साथ-साथ व्यापारी स्त्री भी थीं और माथुर द्वारा लाये गये अनोखे सामान पर लाभ कमाना चाहती थीं। 'वाकई' काली मूछों वाले ने दिलचस्पी जाहिर की। दो वापिस आ रही हैं औरों के वापिस आने की सम्भावना है। मैं एक संग्रहकर्ता हूं मैं आपसे ये पांचों आपके निर्धारित दामों पर खरीद लेता हूं परन्तु आपको वायदा करना होगा कि जो भी प्रतिमा वापिस आयेंगी आप उसे मेरे लिये उठा रखेंगी, मुझे सारी प्रतिमाऐं चाहियें ।

'आपको ये चाहिए'। मिसेज माथुर ने कुछ प्रसन्न हो कर उत्तर दिया। परन्तु हो सकता है लोगों के धोने से कुछ प्रतिमाएं टूट-फूट जायें।

'इसका कुछ फर्क नहीं पड़ता' यदि आप सारी की सारी मेरे लिये रखने का वादा करें तो ये पांचों तथा जो दो वापिस आ रही है मैं अभी खरीद लेता हूं।

'पक्की बात', मिसेज माथुर ने कहा,'ये खरीद लो तो जो भी बाद में आयेंगी तुम्हारे लिये रख दी जायेंगी। जो दो वापिस आने वाली हैं वे किसी मिनट यहां पहुंच जायेंगी।'

'बहुत बढ़िया', काली मूछों वाले ने जेब से सात प्रतिमाओं के पैसे निकाल कर मिसेज माथुर को थमा दिये। अब, मैं ये कलात्मक प्रतिमाएं अपनी कार में रख लेता हूं ।

श्याम उत्सुकता से कांप रहा था वह किसी प्रकार लड़कों को रोकने की तरकीब सोच रहा था और साथ ही साथ उसे पता था वह उन्हें रोक नहीं पायेगा । मि. माथुर ने अभी एक व्यापार की बात पक्की की है और वह अपनी बात से फिरती नहीं हैं । राजू दो प्रतिमाएं ला रहा है और हो सकता है उनमें से एक अगस्टस आफ पोलैंड की हो ।

और काली मूछों वाला उसे हम से लेलेगा क्योंकि उसने उसके पैसे अभी-अभी दे दिये हैं। 'श्याम तुम्हें क्या परेशानी है ? मि० माथुर ने उसे ध्यान से देखते हुए पूछा, तुम कुछ अधिक परेशान दिखाई दे रहे हो, कोई बात है ? 'मेरे ख्याल से हमारे नये दोस्त को एक प्रतिमा चाहिए श्याम ने बहुत सोच कर कहा। वो उसके दादाजी के घर से आई हैं और . . .

'मुझे खेद है' तुम्हें पहले बोलना चाहिए था ये सब अब इन श्रीमान की हो गई और लो ट्रक भी आ गया।

काली मूछों वाले ने बस पांचों प्रतिमाओं को मोटर में रखा ही थी वैसे ही ट्रक घड़घड़ाता हुआ भीतर आया।

राजू और महिन्दर कूद कर ट्रक के सामने के भाग में आये और हंस ने उन्हें प्रतिमायें पकड़ाई। महिन्दर ने फ्रांसिस बकेन की और राजू ने अगस्टस की प्रतिमा पकड़ी। राजू अगस्टस आफ पोलैंड की प्रतिमा को बड़ी सावधानी से अपने सीने से लगा कर ला रहा था। दोनों में से किसी ने काली मूछों वाले को नहीं देखा जब तक की वह जल्दी से लड़कों के सामने नहीं पहुंच गया । लड़कों ये प्रतिमाएं मेरी हैं वह उत्तेजित हो कर चिल्लाया । उसने बढ़ कर राजू की बांहों में पकड़ी अगस्टस की प्रतिमा को कस कर पकड़ लिया। ये प्रतिमा मेरी है और मैं इसे लेकर ही जाऊंगा. छोड़ दो।

श्याम का चकित करना

काली मूछों वाला लटक रहा था, अगस्टस की प्रतिमा को छोड़ना न चाहते हुए राजू खींच रहा था। काली मूछों वाला उस पर गुस्से से चिल्लाया, 'मैं तुम से कह रहा हूं छोड़ दो ये प्रतिमा मेरी है। इस मैंने पैसे दे कर खरीदा है।''

मि० माथुर सख्ती से बोली, ''राजू प्रतिमा उन्हें दे दो''। परन्तु आंटी राजू प्रतिमा को कस कर पकड़ते हुए बोला, 'ये प्रतिमा मैंने अपने मित्र गस को देने का वायदा किया था.'

काली मूंछों वाले ने अपना पूरा जोर लगाकर प्रतिमा अपनी तरफ खींची। राजू की पकड़ भी ढीली नहीं थी, लेकिन काली मूंछों वाले ने एक झटका इतने जोर से मारा कि प्रतिमा राजू के हाथ से छूटकर जमीन पर जा गिरी और टुकड़े-टुकड़े हो गई।

लड़के हक्के-बक्के से उन टुकड़ों की ओर देखते रह गये ' मि० माथुर तो देखने के लिये कुछ दूर थीं परन्तु राजू महिन्दर श्याम तथा गस ने बखूबी अगस्टस की प्रतिमा के सिर के बीचों बीच कबूतर के अंडे के बराबर का चमकता लाल पत्थर देखा।

एक पल के लिये कोई भी नहीं हिला फिर काली मूछों वाला खड़ा हुआ और आगे बढ़ कर पत्थर उठा अपनी जेब में रख लिया।

उसने मि० माथुर की ओर मुड़ कर कहा, ''मेरा ही कसूर है, मैं इसकी पूरी जिम्मेदारी लेता हूं, अब यदि आप मुझे क्षमा करें तो मैं आज्ञा लेता हूं, मुझे जाना है मुझे और प्रतिमाओं की आवश्यकता नहीं है''? वह लपक कर अपनी कार में बैठ तेजी से कबाड़ी घर के बाहर चला गया, जबकि लड़के उदास खड़े उसे जाते देखते रहे।

''उसे मिल गई ! उसे चमकती आंख मिल गई।''



महिन्द्र बोला, फिर उसे अपनी बातचीत का ध्यान आया जिसमें इन्होंने नतीज़ा निकाला था कि काली मूँछों वाला कोई आदमी है ही नहीं, ये तो केवल मि० दूबे ने हमें चक्कर में डालने को घड़ा है।

''जाहिर है हम कहीं ग़लती कर रहे थे'', राजू बोला उसका शरीर ढीला हो गया मुँह लटक गया तथा वह अत्यन्त दुःखी दिखाई देने लगा।

काली मूँछों वाला आज सुबह लाईब्रेरी भी गया था, 'वह भी चमकती आँख' के विषय में जानकारी ढूंढ़ रहा था'।

'ये मामला सब गड़बड़ हो गया' राजू दुखी सा बोला, ''चमकती आँख' हमें मिलने से पहले ही फिर से खो गई, गसे मुझे बहुत दुःख है'।

'ये तुम्हारा कसूर नहीं है' अंग्रेज़ लड़के ने हिम्मत से कहा इसका दोष अपने पर न लो'।

'मुझे पक्का विश्वास था काली मूँछों वाला कोई है ही नहीं', राजू ने आरम्भ किया तभी उसकी आँटी नें उसे टोका, 'राजू अच्छा हुआ उसने दोष अपने पर ले लिया अगस्टकी टूटी प्रतिमा के टुकड़ों के ढेर की ओर देखते हुए बोलीं', वास्तव में कसूर उसी का था प्रतिमा उसी ने गिराई थी, परन्तु लोग सदा ठीक बात नहीं करते। चलो कोई नुकसान नहीं हुआ, टुकड़ों को उठा कर कूड़ेदान में डाल कर सफाई कर दो'।

'अच्छा आँटी,' राजू बोला।

मि० माथुर ने अपने दफ्तर के दरवाजे पर लगी घड़ी की ओर निगाह उठाई, बन्द करने का समय भी हो गया। अगर तुम लड़कों का कुछ देर यहाँ और रहने का विचार हो तो।

इस दशा में दरवाज़ा खुला रक्खेंगे, ख़रीददार खोने का क्या फायदा तुम लोग देख लेना।

''हाँ, हमें अभी कुछ बात करनी है कुछ देर और यहीं रुकेंगे''।

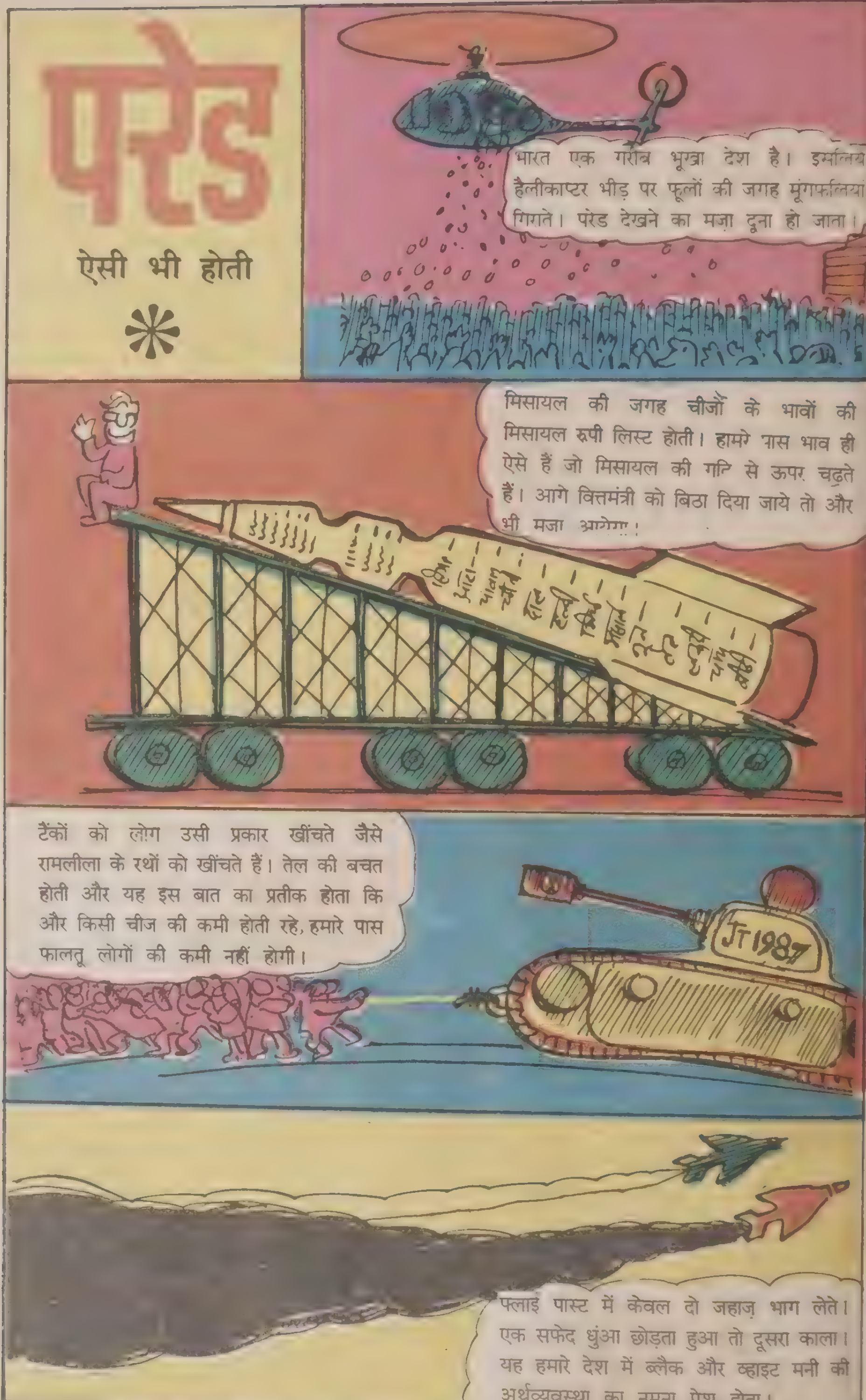
तब तो गेट अभी खुला ही छोड़ देते हैं, सम्भाविक ख़रीददार खोने से क्या फायदा, तुम लोग ही ख्याल कर लेना, मि० माथुर बोली।

राजू ने सहमति प्रकट की और मि० माथुर दिवार के पास ही अपने दुमंजिले घर

शेष पृष्ठ ७४ पर

बन्द करो बकवास





परेड
ऐसी भी होती
भारत एक गरीब भूखा देश है। इसलिये हैलीकाप्टर भीड़ पर फूलों की जगह मूंगफलियां गिराते। परेड देखने का मज़ा दूना हो जाता।
मिसायल की जगह चीजों के भावों की मिसायल रूपी लिस्ट होती। हमारे पास भाव ही ऐसे हैं जो मिसायल की गति से ऊपर चढ़ते हैं। आगे वित्तमंत्री को बिठा दिया जाये तो और भी मजा आयेगा।
टैंकों को लोग उसी प्रकार खींचते जैसे रामलीला के रथों को खींचते हैं। तेल की बचत होती और यह इस बात का प्रतीक होता कि और किसी चीज की कमी होती रहे, हमारे पास फालतू लोगों की कमी नहीं होगी।
JT 1987
फ्लाइ पास्ट में केवल दो जहाज़ भाग लेते। एक सफेद धुंआ छोड़ता हुआ तो दूसरा काला। यह हमारे देश में ब्लैक और व्हाइट मनी की अर्थव्यवस्था का नमूना पेश होता।

माडर्न आर्ट का एक दीवाना



पृष्ठ२१ से आगे

चली गई; जहाँ माथुर मिसेज माथुर तथा राजू रहते थे।

चारों लड़के माथुर कबाड़ी घर में अकेले बैठे थे उन्होंने अगस्टस की प्लास्टर प्रतिमा के टुकड़े इकट्ठे कर मेज़ पर रक्खे, राजू उनका निरीक्षण करने लगा।

देखो! वह प्रतिमा के सिर के भाग में अंडाकार गड्ढ़े को दिखा कर बोला, यही ''चमकती आँख'' थी।

''और अब वह काली मूँछों वाले के पास है, श्याम ने लम्बी सांस खींच कर कहा। अब हमें कभी दुबारा मिलने वाली नहीं है''।

कुछ उम्मीद तो नहीं लगती राजू ने अनमने से हाँ में हाँ मिलाई। चाहे राजू के लिये हार मानने की सम्भावना की सहमति देना भी बहुत ही कठिन था। फिर भी हमें उसे पाने की उम्मीद ढूंढ़ने की कोशिश करनी चाहिये। चलो वर्कशाप में वापिस चलते हैं, अच्छा श्याम तुम बताओ तुमने क्या-क्या पता लगाया? और वह लड़कों को वर्कशाप के एकान्त में ले गया। प्रिंटिग प्रेस और लेद के आस-पास बैठे लड़के बड़े ध्यान से श्याम के लिखे हुए नोटस से 'चमकती आँख' का खूनी इतिहास भारत के पलिश्वार के लोगों के बारे में सुनते रहे।

''अरे भगवान्! मुझे ये सब सुनने में भी अच्छा नहीं लग रहा'' महिन्दर बोला, यदि ''चमकती आँख'' एक बदकिस्मत मानक है तो हमें उसे छोड़ ही देना चाहिये। किसी दूसरे पर ही उसे आफत ढाने दो।''परन्तु दन्तकथा के अनुसार यदि''चमकती आँख'' पचास वर्ष तक बिना देखे और छुए रक्खी तो वो पवित्र हो जायेगी'' को भूला नहीं जा सकता।

''ठीक है महिन्दर मान गया, ''परन्तु तुमने ये भी तो कहा है कि बहुत से एकत्रित करने वाले पचास वर्ष बाद भी इस ख़तरे को मोल नहीं लेना चाहेंगे।

'अब मुझे समझ आनेलगा', गस बोला, उसकी आँखें उत्तेजना से चमक रही थीं। ''मेरे दादाजी अगस्त ने जो व्यवहार किया वह क्यों किया था। उन्होंने 'चमकती आँख' को पचास वर्ष तक छुपी रखने के बाद जब वह पवित्र हो जाये बेचने का विचार किया होगा। परन्तु पचास वर्ष पूरे होने के कुछ पहले ही अपनी मृत्यु का आभास पा कर, उन्होंन इसे मेरे लिये छोड़ा होगा। मुझे पूरा विश्वास है ये अब बिलकुल सुरक्षित और अहानिकर है। ''वह सुरक्षित होगी,'' राजू बोला परन्तु इस समय तो वह काली मूँछों वाले के पास है और मुझे बिलकुल मालूम नहीं कि काली मूँछों वाले से हम उसे कैसे वापिस ले सकेंगे।



'भूत भूत सम्पर्क' श्याम बोला, हम शहर के हज़ारों, बच्चों को इस प्रकार काली मूँछों वाले को ढूंढ़ने में लगा सकते हैं। जब हम उसे ढूंढ़ लेंगे, तब . . .तब वो अटपटा गया, उसे कुछ भी ख्याल नहीं था कि उसके बाद क्या करेंगे।

बिलकुल ठीक'। राजू ने सिर हिलाया, हम सीधे ही उस से 'चमकती आँख' ले थोड़े ही सकते हैं। इसके अतिरिक्त क्या तुम्हें ये भी ख्याल है कि काली मूँछों वाले जैसे इस शहर में कितने लोग होंगे. शायद

हज़ारों, और हो सकता है उसने भेष बदलने के लिये ही काली मूँछें लगा ली हों। तब ये सब फिजूल है। गस ने राजू की बात के बौद की लम्बु चुप्पी तोड़ते हुए कहा। इसके बाद फिर सब बिलकुल चुप हो गये, यहाँ तक कि राजू कुछ सोच नहीं पा रहा था। इतने में उन्हें तेज़ घंटी की आवाज़ सुनाई दी।

'घंटी, ! राजू, लगता है कोई ख़रीदार है, श्याम बोला। ''मैं जाकर देखता हूँ, उसे क्या चाहिये,'' वह उठ कर दरवाज़े की ओर बढ़ा और दूसरे सब उसके पीछे हो लिये।

जैसे ही वह बाहर निकले उन्हें अपनी काली कार के पास खड़ा ख़रीदार हाथ में छड़ी लिये दिखाई दिया। ओह! ओह! महिन्दर बोला, तीन बिन्दू फिर आ गया। 'मुझे ये सब अच्छा नहीं लग रहा', महिन्दर धीरे से बोला।

परन्तु राजू तीन बिन्दू की ओर बढ़ रहा था और दूसरे उसके पीछे थे। उन्होंने देखा राजू ने कंधे झुका लिये, मुँह लटका लिया और अपनी बेवकूफ सूरत तीन बिन्दू के लिये बना ली।

'नमस्कार लड़कों' कह कर तीन बिन्दू मुस्कराया, परन्तु उसकी मुस्कान भली न थी 'मैं अभी इस का निरीक्षण कर रहा था' उसने अपनी छड़ी से अगस्टस आफ पोलैंड के टुकड़ों की ओर संकेत किया।

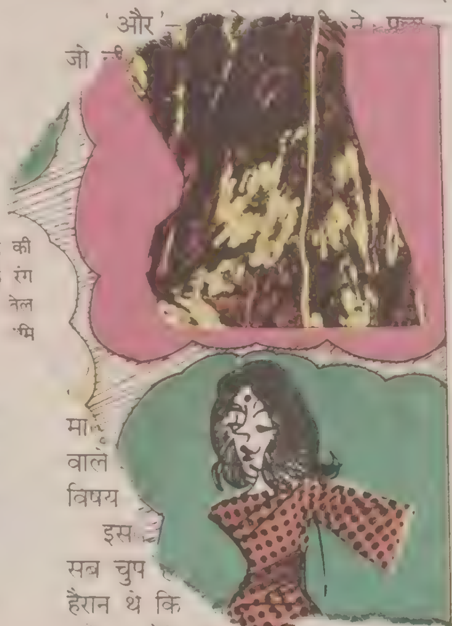
'ये अगस्टस आफ पोलैंड की प्रतिमा के टुकड़े प्रतीत होते हैं, जिसमें मेरी विशेष रुचि थी, मेरे ख्याल से मैंने उसके वापिस आने पर मुझे फोन करने को कहा था?

'हां जनाब!' राजू बोला 'केवल ये टूट गया था'। 'और मैं विस्मित हूँ कि ये टूटा कैसे? तीन बिन्दू की मुस्कराहट इस समय शिकार के सामने खड़े भूखे शेर जैसी थी। ''मैंने इसके सिर में बना गड्ढ़ा, विशेष ध्यान से देखा है, इसमें कुछ छिपा हुआ था। 'हाँ, जनाब!' राजू मरी सी आवाज़ में बोला.'एक खरीदार से ये गिर कर टूट गया उसने कुछ उठा कर रख लिया हम उसे देखने नहीं पाये'। ये बिलकुल सत्य ही था वह देख नहीं पाये थे हालाँकि उन्हें पूरा मालूम था कि काली मूँछों वाले ने क्या उठाया था।

'ये खरीदार', तीन बिन्दू बोला, क्या वह बड़े चश्मे और काली मूँछों वाला आदमी था?

'राजू ने सिर हिलाया', महिन्दर, श्याम और गस ने परेशान सी नजर मिलाई।

'और'— ... ने ... क्या जो ...



मा... वाले ... विषय ... इस ... सब चुप ... हैरान थे कि ... आँख' कैसे आ गई जब कि केवल आधा घंटा पहले ही काली मूँछों वाला उसे लेकर गया है।

'मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ'

'तीन बिन्दू' ने अपनी छड़ी उठा कर उस के हत्थे को घुमाया, ऐसा करते ही चमकती तलवार का फल बाहर आ गया। उसे उसने निन्दनीय दृष्टि से देखा।

'लापरवाही' वह बोला 'इसे मैंने अच्छी तरह साफ़ नहीं किया'।

उसने अपनी जेब से टिशू कागज निकाल कर तलावार को साफ़ किय। कुछ चिपकनी लाल चीज़ ब्लेड से कागज पर लग गई।

खून बढ़िया लोहे का नाश कर देता है, वह बोला एक फुरफुरी लड़कों के शरीर में दौड़ गई, फिर भी उसने आगे बढ़ कर तलवार की धार को तेजी से चमकती आँख पर

शेष पृष्ठ ५२ पर

कौन सी साड़ी पहनूं गाइड

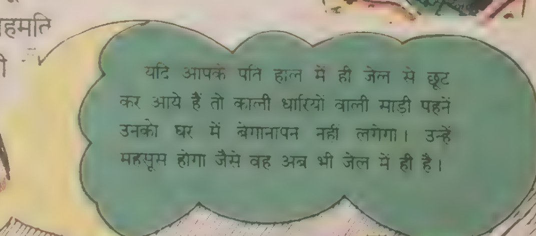
कहीं बाहर जाने से पहले नारियों के सामने एक ही ज्वलंत समस्या होती है कि कौन सी ? किस रंग की पहनूं ? यही सवाल ...यां पतियों को आधा पागल कर ...वाल का जवाब ढूंढ़ते औरतों ... जाती है। अब यह समस्या ... नहीं करेगी। हम यहां ... जिससे आपको पता ... पर कौन सी साड़ी

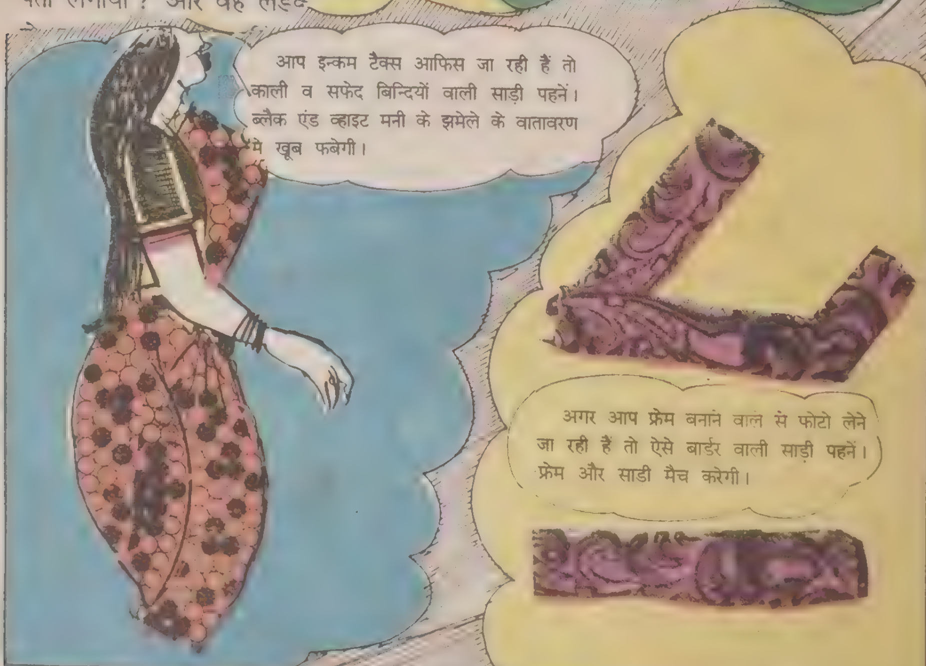


...प्रतिमा के सिर अंडाकार गड्ढ़े को दिखा कर बोला, "चमकती आँख" थी।

"और अब वह काली मूँछों वाले के पास है, श्याम ने लम्बी सांस खींच कर कहा। अब हमें कभी दुबारा मिलने वाली नहीं है"।

कुछ उम्मीद तो नहीं लगती राजू ने अनमने से हाँ में हाँ मिलाई। चाहे राजू के लिये हार मानने की सम्भावना की सहमति देना भी बहुत ही कठिन था। फिर भी उसे पाने की उम्मीद ढूंढ़ने की कोशिश... चाहिये। चलो वर्कशाप में वापिस चल... अच्छा श्याम तुम बताओ तुमने ... पता लगाया ? और वह लड़के...







अगर आप नेता गीरी करती हैं तो गहरे रंग पर पीले व लाल बड़े फूलों के डिजायन की साड़ी पहन कर भाषण दें। आप पर अंडे या टमाटर फेंके भी जायें तो साड़ी के इस डिजायन में खप जायेंगे।
यदि आपको आत्महत्या करनी है तो फूलों के डिजायन वाली साड़ी पहनें। रिश्तेदार शव पर फूल डालेंगे तो उनके साथ मेल खायेगा।
अगर आपकी सास अत्याचारी स्वभाव की है तो सफेद साड़ी पहनें जिस पर हलके रंग का बहता हुआ सा पैटर्न हो। जब सास तेल छिड़क कर आग लगायेगी तो हल्की पृष्ठभूमि में लाल लपटें और काला धुआं उभर कर दिखाई देगा।
परीक्षा का रिजल्ट जिस दिन आना हो उस दिन बिन्दियों वाली साड़ी पहनें। परीक्षा में मिले शून्यों और साड़ी में खूब बात जमेगी।
आपके पति बुद्धू टाइप के हैं तो ऐसी साड़ी पहनें। डिजायन कुछ ऐसा है जैसे स्लीपिंग सूट का हो। पति और आपकी साड़ी खूब मैच करेंगे! (बुद्धू यानि आपके पति पाजामा हैं न!)

शेष पृष्ठ ३[illegible] पर

खेल खेल में

क्रिकेट चैम्पियन दिल्ली
उड़ गई खिल्ली — रह गयी गिल्ली



डी.डी.सी.ए. अध्यक्ष राम प्रकाश मेहरा

दिल्ली की टीम ने १९८० वर्ष में रणजी ट्राफी जीती फिर शेष भारत को ईरानी ट्रॉफ़ी में परास्त कर सबको चकित कर दिया। यह जीतें चकित करने वाली इसलिये भी थीं क्योंकि दिल्ली क्रिकेट ऐसोसियेशन के अधिकारियों ने अपनी टीम को हराने की पूरी साजिश की थी। यह ऐसे ही है जैसे रोज आपस में कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ने वाले मिंया बीबी के हाथ जोड़ ''मेड फॉर ईच अदर'' का पुरस्कार लगाये।

दिल्ली एंड डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट ऐसोसियेशन स्वयं में एक खुद अजूबा है। देश में यही एक ऐसी ऐसोसियेशन है जो प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के रूप में रजिस्टर्ड है। इसके १,७०० मैम्बर हैं जिनका खेल की दुनिया से कोई नाता नहीं है। ऐसोसियेशन की चाबियां ३०/४० मैम्बरों के हाथ में हैं जो क्रिकेट ऐसोसियेशन के प्रेजिडेंट व अधिकारियों के पिट्ठू हैं। यह एक खेल संस्था नहीं बल्कि रेवड़ियों की दुकान है। यह बात छिपी नहीं है कि दिल्ली का टैस्ट सैंटर देश में सबसे घटिया है। वेस्ट इंडीज के भूतपूर्व कप्तान स्वर्गीय फ्रैंकवॉरेल ने कहा था कि दिल्ली विश्व का निकृष्टतम राजधानी टैस्ट ग्राऊंड है। भारत के मुख्य शहरों की तुलना में दिल्ली में क्लब स्तर के खेल का प्रबन्ध भी सबसे गया गुजरा है। ऐसोसियेशन के अधिकारी अनेकों बरसों से क्रिकेट से ऐसा ही व्यवहार करते आ रहे हैं जैसे पुराने जमाने के जमींदारों के आदमी प्रजा से करते थे। कई होनहार क्रिकेटर इन अधिकारियों की अंधेरगर्दी का शिकार होकर टूट गये। ऐसोसियेशन के अध्यक्ष रामप्रकाश मेहरा हैं जो स्वयं को मुगल बादशाह से कम नहीं समझते। उनके दरबार में अदब से उनकी कार्निश बजाना खिलाड़ियों का प्रथम कर्त्तव्य है। एक बार की बात है कि दिल्ली के भूतपूर्व कप्तान आकाश लाल एक रणजी मैच में शतक बना कर पैविलयन लौटे और ड्रेसिंग रूम में पैड उतार ही रहे थे कि बादशाह रामप्रकाश मेहरा पधारे। उन्होंने देखा कि उनके आते ही आकाश लाल ने उठ कर उन्हें सलाम नहीं किया न ही अदब से सिर झुका कर खड़ा हुआ तो शतक बनाने की शाबाशी की जगह मेहरा साहब के मुंह से गन्दी गालियों की बौछार हुयी। वे एक नाचीज़ क्रिकेटर की गुस्ताखी से इतने खफा हुये कि आकाश लाल को टैस्टों में नहीं आने दिया। यह तो एक छोटा सा उदाहरण है इनके मिजाज का।

इसी प्रकार की खींचतान का शिकार हुये हैं। बिशन सिंह बेदी। उनके दिल्ली क्रिकेट में पदार्पण के साथ ही नयी खींचतान शुरू हुयी। बिशन सिंह जरा दबंग तबीयत के व मुंहफट

आदमी हैं। अधिकारी उन्हें उस तरह मुर्गा न बना सके जैसे वह दूसरों को बनाया करते थे। बेदी ने दिल्ली को अपनी लग्न व अथक परिश्रम से चैम्पियनशिप के शिखर पर पहुंचा दिया। दूसरे इसी दौरान बिशन ने बॉलर के रूप में विश्वख्याति पा ली और भारत के कप्तान भी बने. इसलिये उन्हें छेड़ना आसान नहीं रह गया, उल्टे बिशन सिंह जब भी मौक़ा मिलता डी.डी.सी.ए. पर छीटांकशी करने से बाज नहीं आते।

जब बेदी की कप्तानी में भारत की टीम पाकिस्तान के दौरे से बुरी तरह पिट करके आयी तो अधिकारियों को वह मौक़ा नज़र आया। वे बेदी पर ऐसे ही टूटे जैसे घायल जानवर पर गीदड़ व सियार टूटते हैं। राम प्रकाश मेहरा गिद्ध की तरह मंडराने लगे। और बेदी को अपमानित करने का हर जायज नाजायज़ रास्ता अपनाया गया।

अधिकारियों की मनमानी का यह हाल है कि कब किसका, पत्ता कटेगा कोई नहीं कह सकता। कौन किस मैच का कप्तान होगा यह अल्ला मियां भी नहीं बता सकता। आज बेदी है, कल सुरिन्द्र अमरनाथ, परसों वेंकट सुंदरम, चौथे महिन्दर अमरनाथ और पांचवे दिन विनय लाम्बा। एक मैच में सुरिन्द्र टीम में स्थान पाने योग्य नहीं समझा जाता तो दूसरे ही मैच में वह सीधे कप्तान बनाया जाता है। दिल्ली क्रिकेट को चोटी पर पहुंचाने के साथ-२ बेदी ने एक काम और किया वह यह कि खिलाड़ियों में विद्रोह व आत्मसम्मान की भावना जगाई जो अब रंग ला रही है। इस रंग के तमाशे के कुछ उदाहरणः—इस वर्ष जम्मू काश्मीर के विरुद्ध मैच में सुरिन्द्र की कप्तानी में खिलाड़ियों ने खेलने से इंकार कर दिया फलस्वरूप विनय लाम्बा को कप्तानी निभानी पड़ी। नवम्बर में ही रोहतक में हरयाना के विरुद्ध मैच में सुरिन्द्र के स्थान पर अचानक आखिरी समय राकेश शुक्ला के कप्तान बनाने की कोशिश की गयी तो मैच का पांच वरिष्ठ खिलाड़ियों ने बहिष्कार किया। बेदी को टीम में पहले ही स्थान नहीं दिया गया था। अधिकारियों ने पहले सुरिन्द्र अमरनाथ के कप्तान होने की घोषणा की थी लेकिन आखिरी मौके पर राकेश शुक्ला को कप्तान बनाना चाहा क्योंकि सुरिन्द्र अनुपस्थित था। अधिकारियों को सुरिन्द्र के न आने का पहले ही पता था लेकिन उन्होंने खिलाड़ियों को झांसा देना चाहा था। परिणाम यह हुआ कि दिल्ली की उस मैच में शर्मनाक पराजय हुयी। १४ नवम्बर को दिल्ली में पंजाब व दिल्ली का मैच होना था परन्तु मैच से पहले बेदी समर्थकों ने मैदान के पिच को खोद कर खेल के अयोग्य बना दिया।

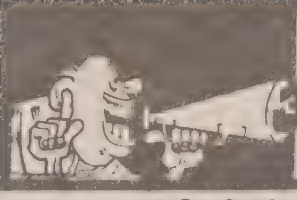
इस वर्ष इस तमाशे में एक और नाटक मंडली शामिल हुयी। लोकसभा सदस्य कमलनाथ (कांग्रेस आई) ने दिल्ली स्टेट क्रिकेट एसोसियेशन के नाम से नयी ऐसोसियेशन रजिस्टर करवाई और क्रिकेट बोर्ड से मान्यता प्राप्त करने का प्रयत्न किया तथा यह भी मांग की कि डी.डी.सी.ए. की मान्यता समाप्त की जाये नयी ऐसोसियेशन दिल्ली के क्लब को तोड़ कर अपनी ओर मिलाने का भरसक प्रयत्न कर रही है। दिल्ली के संसद सदस्यों ने डी.डी.सी.ए. के विरुद्ध ब्यान भी ज़ारी किये हैं।

दिल्ली क्रिकेट पर से मेहरा व उन के पिट्ठुओं का कब्ज़ा हटने पर सब क्रिकेट प्रेमियों को प्रसन्नता होगी लेकिन रह रह कर एक सवाल उठता है कि दूसरी ओर तो पेशेवर राजनीतिज्ञों की मंडली है। खेलों की राजनीति ने वैसे ही दूषित कर रखा है। कही ऐसा तो नहीं कि दिल्ली क्रिकेट मगरमच्छ के मुंह से छूट जाये लेकिन सांप के मुंह में फंस जाये?

पृष्ठ २७ से आगे


शादी आदि पर ऐसी साड़ी पहनें। आप कितना ही माल खा जायें लोगों को पता नहीं लगेगा क्योंकि वे आपको पंडाल के पर्दे का ही एक भाग समझ बैठेंगे।
तलाक के मुकदमें में अदालत में पीले बेस पर बारीक लाल गहरी कशीदाकारी वाली साड़ी पहन कर जायें। आपके पति का वकील आप पर कीचड़ उछालेगा तो उसके छींटों में साड़ी का यह डिजायन खूब उभरेगा।
किसी की बर्थडे पार्टी में आपको खाली हाथ जाना पड़ रहा है तो फूलों के रंग बिरंगे मोटे डिजायनों वाली साड़ी पहनें। अधिकतर लोगों को पता ही नहीं लगेगा कि आप फूलों का गुलदस्ता साथ नहीं लाईं।
आपके पति को घर लौटने में देर हो रही है तो हरे रंग की साड़ी पहनें। आपके गुस्से से लाल पीले होते शरीर के बैकग्राऊंड में खूब जमेगा।
आप पार्क में जा रही हैं तो पीले बेस पर हरे व नीले बेल बूटों वाली साड़ी पहनें। कौआ या कबूतर आपकी साड़ी पर बीट कर भी दे तो पता नहीं लगेगा।
आपको अपने पति द्वारा विश्वासघात का पता लग गया है तो काले/सफेद पैटर्न की ऐसी साड़ी पहनें। घर के वातावरण में खूब मैच करेगी। आप उनके काले कारनामों का चिट्ठा खोलेंगी वह सफेद झूठ बोलेंगे।


यदि आपकी सलाह परीक्षा में नकल करने की है तो सादी बारीक छापे वाली साड़ी पहन कर जायें। नकल के लिये छुपा कर रक्खे पन्ने साड़ी के साथ एक रंग नजर आयेंगे।
आप कार चलाने जा रही हैं तो हरे या गहरे स्लेटी रंग की साड़ी पहनिये। स्लेटी रंग का सफेद से मेल बैठता है। और आपको पता ही है कि हस्पतालों में सफेद रंग ही होता है चारों ओर।
दुर्भाग्य से यदि आपका धंधा कच्ची शराब बेचने का है तो इस डिजायन की साड़ी ठीक रहेगी। जेल के सींकचों के साथ खूब मेच करेगी।
जब पति से जेल में मिलने जाना है तो जालीदार साड़ी डालें। जेल की जाली के साथ मैच बैठेगा।
अगर आप किसी आन्दोलन में भाग लेने जा रही हैं तो काले और सफ़ेद डिजायन की साड़ी ही पहनें। यह टी.वी. पर अच्छी दिखती है। समाचारों में आपकी फोटो आ सकती है।



आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

रामअवतार—नई दिल्ली : मेरा कुत्ता खो गया है, क्या करूं ?

उ० : वह पढ़ा लिखा तो होगा नहीं इसलिए समाचार पत्रों में विज्ञापन देने की बजाये टैलिविजन पर खोये हुए व्यक्तियों की सूचनाओं में उसे उसकी फोटो दिखाइए ।

करतारसिंह—अम्बाला कैंट : आप इतने अकलमन्द हैं आप के घर के तो नौकर भी अकलमन्द होंगे ?

उ० : नौकर हमारे घर में टिकते ही कहाँ हैं दो सप्ताह पहले एक भले आदमी को पकड़ कर लाए थे कल वह भी रोता हुआ हमारे पास आया तो हमने पूछा, 'कौनसा आसमान टूट पड़ा है जो दहाड़ें मार-मार कर रो रहे हो ।' नौकर बोला, 'बीबी जी ने मारा है।' इस पर हमने कहा, 'अरे मूर्ख इतनी सी बात है ।' कभी तूने हमें भी रोते देखा है ?

के० पी० सकसैना—गाजियाबाद : आपने बातूनी होने का आर्ट कब सीखा ?

उ० : स्कूल के दिनों में ही हम इस आर्ट में माहिर हो गए थे । एक बार मास्टर जी ने कहा, 'एक शब्द है, सप्ताह, इसे वाक्य में प्रयोग करो', हमने उत्तर दिया, 'अगर आप हमें सप्ताह में सात दिन की छुट्टी दे दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी ।'

जगतसिंह विष्ट—भिकियासैण, अलमोड़ा : चाचा जी, यदि दुनिया में प्रेम नाम की चीज न होती तो क्या होता ?

उ० : सब एक दूसरे से प्रेम करते ।

श्रवण श्रेष्ठ, 'अमित'—नवतंवा, गोरखपुर : नेता का चुनाव वोटों की गिनती से होता है, प्रेमिका का चुनाव किस प्रकार करना चाहिए ?

उ० : अपने सर के बालों की गिनती से ।

सुरेन्द्र खुराना, 'पप्पू'—मोगा : डीयर अंकल, जिन्दगी के सफर और गाड़ी के सफर में क्या अन्तर है ?

उ० : इतना अन्तर है कि उसका ब्योरा दें तो सारा दीवाना भर जाये । पर जब पैंचर हो जाये तो कोई अन्तर नहीं है ।

चंद्रभान 'अनाड़ी',—जबलपुर : जिन्दगी का हर ख्वाब पूरा क्यों नहीं होता ?

उ० : क्योंकि जिन्दगी खुद एक अधूरा ख्वाब है ।

राजेन्द्र कुमार राजू—झांसी : चाचा जी, आपको चाची से अधिक प्यार है या अपने बच्चों से ।

उ० : अपने उन दीवाना प्रेमियों से जो हमारे बच्चे हैं । और सच पूछिये तो आपकी चाची भी इस एतबार से हमारा बच्चा है, क्योंकि वह भी दीवाना प्रेरित हैं ।

कुलदीप शर्मा—रेवाड़ी : आपके प्रश्न उत्तर से मैं बहुत खुश हूं । इतना खुश हूं कि आप अनुमान भी नहीं लगा सकते कि मैं आपको कितना बड़ा उपहार देने वाला हूं ।

उ० : क्या आप हमें कुतुब मीनार या ताजमहल देने वाले हैं ? इस बात पर फिर हमें दो अफीमचियों की बात याद आ गई । एक ने कहा, तुम्हें पता है, कल मैं अमरीका के तमाम कारखाने खरीदने वाला हूँ ? दूसरे ने उत्तर दिया, क्या बात करते हो, तभी खरीदोगे ना जब मैं बेचूंगा ?

आपस की बातें

दीवाना साप्ताहिक

८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-११०००२

क्यों और कैसे

प्र० : संसार में सबसे पहले कब लोगों ने कान छिदवाने आरम्भ किये थे ?

उ० : कान छेदने की प्रथा मनुष्यों में प्रागैइतिहासिक युग से चली आ रही है। प्राचीन पूर्व भारतीय, मीडस, मिस्त्री, अरबी तथा हिबरु लोग कानों में आभूषण पहनते थे।

कानों के आभूषण कलात्मक तथा मूल्यवान प्राचीन काल में ही हो गये थे। इटरुस्कन के लोग फल, फूल, फूलदान, ढ़ाल, पहाड़ी के समान मोर, हंस इत्यादि जैसे कान के सोने के आभूषण बनाते थे। यूनानी कान की बहुत सुन्दर सोने की बालियाँ बनाते थे और अपने देवी देवताओं के कानों को भी इन आभूषणों से सजाते थे। उस समय यूनान के लड़के भी व्यस्क होने की आयु तक कानों के आभूषण पहिनते थे।

प्राचीन रोम निवासियों ने भी युनानियों की नकल में कानों के आभूषण ग्रहण करने शुरू कर दिये, वहाँ की स्त्रियों ने मोती और रत्नों से जड़वा कर बहुत ही मूल्यवान कानों के आभूषण बनवाने आरम्भ कर दिये थे। रोम के आदमियों ने कान में आभूषण पहिनने के लिये कानों में छेद करवाने आरम्भ कर दिये और इसका इतना रिवाज़ बढ़ गया कि तीसरी शताब्दी में वहाँ के बादशाह ने कान छेदने की मुनादी का हुक्म दे दिया।

मध्यकाल के बाद आदमियों में केवल बायें कान में बाली पहिनने का रिवाज़ शुरू हुआ। फिर आदमियों तथा औरतों के बाल रखने के ढंग बदले और बाल लम्बे रखने लगे जिससे कान ढक जाते थे और इस प्रकार एक बार कानों के आभूषण पहनने की प्रथा पुरानी हो गई। परन्तु पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं शताब्दी में दुबारा से इस प्रथा का चलन आरम्भ हुआ।

कानों के आभूषण पहिनने की प्रथा तब से बराबर प्रचलित है। आधुनिक काल में पुरुषों में कान के आभूषण पहिनने का रिवाज़ नहीं है, परन्तु अभी भी संसार में कोई कोई जाति के लोगों में पुरुषों के कानों में आभूषण पहिने जाते हैं। इनमें अधिकतर जिप्सी, नाविक तथा इटली, स्पेन तथा भारत में पाई जाने वाली कुछ जातियों के पुरुष हैं। एक समय डाक्टरों का मत था कि कान छेदने से शरीर को कई प्रकार के रोगों से बचाया जा सकता है, परन्तु अब इस धारणा को कोई महत्व नहीं दिया जाता।

प्र० : रक्त बैंक कैसे कार्य करते हैं ?

राजीव रेजन राही धनबाद

उ० : रक्त बैंक बहुत से हस्पतालों में होते हैं, इन बैंकों में हर ग्रुप का रक्त जमा किया जाता है। जब रक्त की एक मात्रा की आवश्यकता होती है तो रक्त बैंक से ले लिया जाता है। स्वस्थ लोग समय-समय पर रक्त देकर प्रयोग में लाया गया रक्त पूरा करते रहते हैं। रक्त ठंडा रखने पर लगभग तीन सप्ताह तक रक्खा जा सकता है। रक्त को जमने से बचाने के लिये सोडियम सिटरेट नामक रसायन इस में मिला दिया जाता है।

रोग, आपरेशन अथवा चोट इत्यादि लग जाने से बहुत खून बह जाने की अवस्था में खून चढ़या जाता है, बहुत बार रक्त का तरल भाग प्लास्मा अकेला ही चढ़ाया जाता है। प्लास्मा अधिक तर बुरी तरह जले लोगों को चढ़ाया जाता है क्योंकि ज्यादा जल जाने पर शरीर से बहुत सा प्लास्मा नष्ट हो जाता है।

कुछ अनिमिया के रोगियों को केवल रक्त

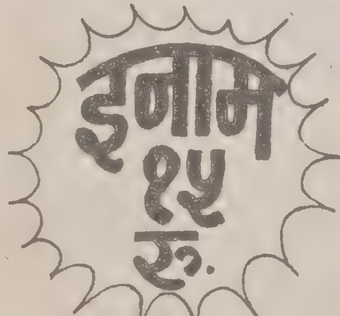
शेष पृष्ठ ५२ पर

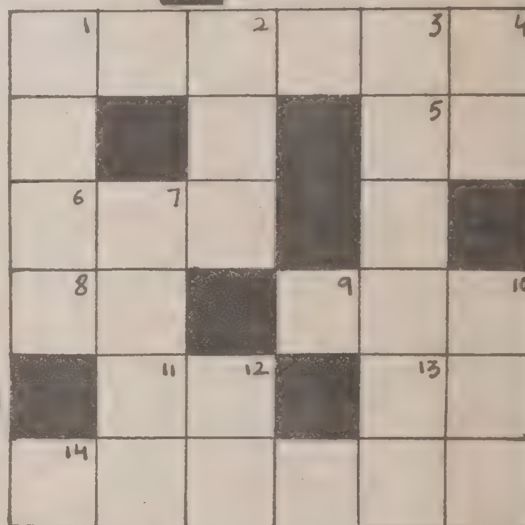
क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - ११०००२.


बुरे फंसे
जादू की बीन बजा कर



वर्ग पहेली





अन्तिम तिथि–२१-२-८१

संकेत

बायें से दायें

१. इसे पार करने पर अपहरण का खतरा है। (४-२)

५. मध्यप्रदेश के कस्बे रतलाम का सबसे नीचा भाग ? (२)

६. जहां आप कभी कभी अपनी अक्ल रखते हैं, उसमें प्रथम रचना रखें तो आप को पार लगाने वाला मिलेगा। (३)

८. लेकिन उल्टा ! (२)

९. उसमें अधूरा मन लगाने पर पसीना आयेगा। (३)

११. टाट लपेटने में यहां जमा मत रह। (२)

१३. वह नहीं बल्कि आप और मैं बहम में हैं। (२)

१४. नमकीन जल को हिला कर दिल में आग लगाई जा सकती है ? (२, १, ३)

ऊपर से नीचे

१. बीच-बीच में स्वर लहरी छेड़ते हुये बिजली का कनैक्शन जोड़ता जा कि सिलसिला न टूटे ? (४)

२. अधिकार की सुगंध ? (३)

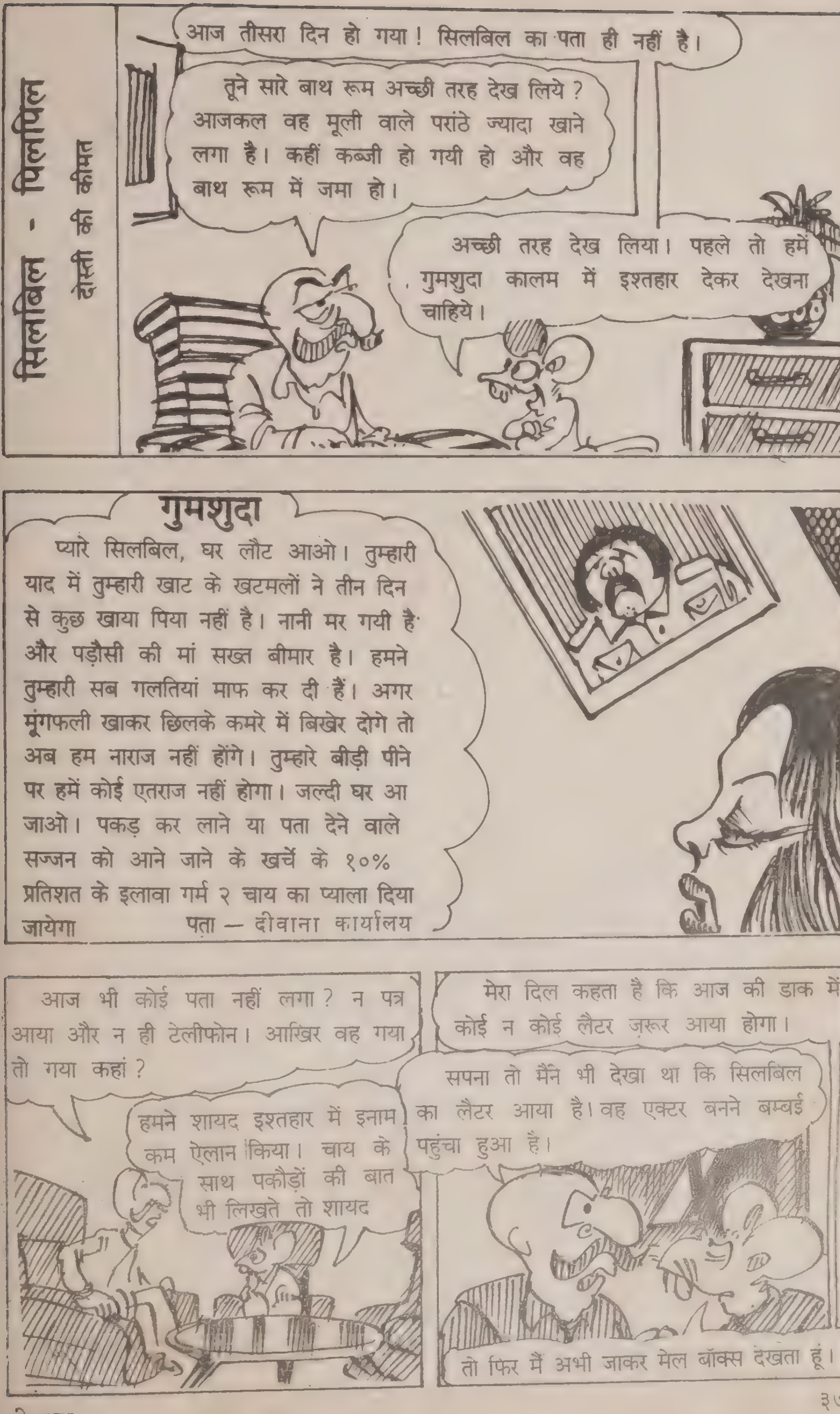
३. प्रायः प्रेमी ऐसा भवन बनाते हैं संभवतः सीमेंट की कमी के कारण ! (२, १, ३)

४. पेट में डाल और ले आ ऐसी रिश्तेदार ! (२)

७. शिकायत लिखाते समय हुई फिसलन जो अंत में बहुत भारी पड़ती है ? (४)

१०. अदालती बुलावा जो यह निर्देश देती है कि अपना दिल भी साथ लाना। (३)

१२. उल्टी पड़ी चुभने वाली वस्तु भाग्यशाली साबित होगी ! (२)

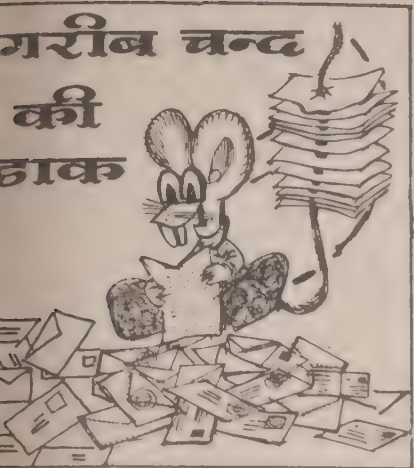

सिलबिल - पिलपिल
दोस्ती की कीमत
आज तीसरा दिन हो गया! सिलबिल का पता ही नहीं है।
तूने सारे बाथ रूम अच्छी तरह देख लिये? आजकल वह मूली वाले परांठे ज्यादा खाने लगा है। कहीं कब्जी हो गयी हो और वह बाथ रूम में जमा हो।
अच्छी तरह देख लिया। पहले तो हमें गुमशुदा कालम में इश्तहार देकर देखना चाहिये।
गुमशुदा
प्यारे सिलबिल, घर लौट आओ। तुम्हारी याद में तुम्हारी खाट के खटमलों ने तीन दिन से कुछ खाया पिया नहीं है। नानी मर गयी है और पड़ौसी की मां सख्त बीमार है। हमने तुम्हारी सब गलतियां माफ कर दी हैं। अगर मूंगफली खाकर छिलके कमरे में बिखेर दोगे तो अब हम नाराज नहीं होंगे। तुम्हारे बीड़ी पीने पर हमें कोई एतराज नहीं होगा। जल्दी घर आ जाओ। पकड़ कर लाने या पता देने वाले सज्जन को आने जाने के खर्चे के १०% प्रतिशत के इलावा गर्म २ चाय का प्याला दिया जायेगा
पता — दीवाना कार्यालय
आज भी कोई पता नहीं लगा? न पत्र आया और न ही टेलीफोन। आखिर वह गया तो गया कहां?
हमने शायद इश्तहार में इनाम कम ऐलान किया। चाय के साथ पकौड़ों की बात भी लिखते तो शायद
मेरा दिल कहता है कि आज की डाक में कोई न कोई लैटर ज़रूर आया होगा।
सपना तो मैंने भी देखा था कि सिलबिल का लैटर आया है। वह एक्टर बनने बम्बई पहुंचा हुआ है।
तो फिर मैं अभी जाकर मेल बॉक्स देखता हूं।


यह ही वह लैटर है। जिसकी हमें इंतजारी थी। बड़ी सनसनी खेज खबर है। सिलबिल का अपहरण किया गया है। लिखा है। आज बारह बजे दोपहर हमारा प्रतिनिधि तुम से आकर मिलेगा और सिलबिल की रिहाई की शर्तों पर बात करेगा। अगर तुमने बेईमानी की या पुलिस को खबर करने की कोशिश की तो हम सिलबिल की बोटियां काट कर कुत्तों को खिला देंगे।
यह तो पुण्य का काम होगा।
तुम्हें हमारा लैटर सुबह की डाक से मिल गया था?
क्या तुम्हीं लोगों ने सिलबिल का अपहरण कर रखा है?
हां। हमारे गैंग का नाम काला अक्षर भैंस बराबर है।
लेकिन मुझे तो तुम बकरी बराबर लग रहे हो। तुम्हारी मूंछे बकरी की पूंछ जैसी हैं।
अभी तुम्हें पता लगेगा जब शर्तें सुनोगे।
सिलबिल हमारे कब्जे में है। यह मैं नहीं बताऊंगा कि हमने उसका अपहरण कैसे कर लिया। क्योंकि उठाईगीरि के धंधे से रिटायर होने के बाद मैं अपनी डायरियां सच्ची कहानियों में छपवाना चाहता हूं।
उसे कब्जे में करने का कारण? क्या उसने तुम्हारी भैंस को डंडा मारा था। तुम्हें क्या चाहिये?
हमें नकद पैसे चाहिये। अगर उसे सही सलामत वापिस पाना चाहते हो, तो बीस हज़ार रुपये लाओ।


बीस हज़ार ? तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ? तुम्हारी पिस्तौल में क्या जंग लगा जो सिलबिल का ही अपहरण किया। अरे पैसे चाहिये थे तो किसी मोटे लाले के लड़के को उठा कर ले जाते। बीस हज़ार रुपये मांग रहा है।
सिलबिल की बजाय तुम हमारी इस मुर्गी को उठा कर ले जाते तो हम आठ दस रुपये दे भी देते। यह अंडे तो देती है बिचारी ! वह क्या देता है ? कुछ नहीं। सिर्फ खाना मांगने के लिये आवाज़ देता है।
मेरी कीमत बस दस रुपये ?
मियां ज़रा होश की बात करो। दो चार रुपये लेने हैं तो बात करो। दो चार रुपये भी हम तुम पर तरस खाकर दे रहे हैं। बोलो मंजूर है सौदा ?
मुझे मज़ाक बिल्कुल पसंद नहीं है। तुम आग से खेल रहे हो।
यह मज़ाक नहीं है। उसके बीस हज़ार कौन क्यूं देगा। अगर तुम मुझे यही बता दो कि तुम मूंछों में कौन सा तेल लगाते हो तो मैं पांच रुपये दे दूंगा। अगर सिलबिल की रिहाई के लिये चार रुपये तुम्हें मंजूर नहीं तो जाओ जो करना हो कर लो।
ओह माई गॉड।
हम धोखा खा गये। हमें यह पता नहीं था कि तुम अपने दोस्त की इतनी कम कीमत लगाओगे। इस दुनिया से दोस्तों का भरोसा उठ गया है। एक मित्र की जान की कीमत केवल चार रुपये ? चार रुपये में आजकल एक सीताफल नहीं आता। अपने दोस्त के साथ किये विश्वासघात के लिये तुम उम्र भर पछताओगे। रातों की नींदें हराम हो जायेंगी। चंद चांदी के टुकड़ों के लिये तुम अपने जिग्र के टुकड़े को बेचने पर उतर आये हो। अभी तुम्हारे सामने मैं एक पर्दाफाश करने वाला हूं। होशियार ! खबरदार।



सिलबिल पिलपिल के कारनामे अगले अंक में पढ़िये



म० एस० गुजराल—माडल टाऊन रनाल : डीयर गरीब चन्द जी, क्या किसी दिल चुराना जुर्म-ए-संगीन होता है ?

० : नहीं भाई ! यह जुर्म संगीन नहीं रंगीन ता है ।

वल प्रकश दुआ—काशीपुर उ० प्र० : न के लाले कब पड़ जाते हैं ?

० : आज के जमाने में पैदा होने के बाद से जान के लाले पड़े रहते हैं मरते दम तक। पूछिये कि लाले कब नहीं पड़े होते हैं ?

० सतीन्द्र जैन सुदर्शी'—जबेरा (म० प्र०) रीब चन्द जी, क्या आपका परिवार नियो- त है ?

० : जी हां ! हम तीन ही हैं! सिलबिल लपिल व मैं !

० : गरीब चन्द जी, सुना है कि आप सिल- ल-पिलपिल के लीगल एडवाइजर हैं ?

० : मैं इल्लीगल एडवाजर हूं क्योंकि नसे कई गैरकानूनी कारनामे करवाता हूं ।

बूलाल अग्रवाल—केबड़ावाडी (रायगढ़) जन्नत जाना चाहता हूं । क्या आप उसका रास्ता बता सकते हैं ?

: मैं किसी को गलत रास्ते पर नहीं डालता नत जाकर पछताओगे । अकेले बैठे-बैठे र होकर माथा पीटोगे क्योंकि आजकल जहन्नुम जा रहे हैं । मैं तो यही कहूंगा भैया वहीं जाओ जहां सब जा रहे हैं ।

सुधीर श्री वास्तव—मुजफ्फर, बिहार : मेरी चाची हैं अंजु, उनको पत्रिका जमा करने का शौक है कृपया आप यहां चले आयें मजे में रहेंगे ।

उ० : मैं अगर वहां आ गया तो दीवाना के दफ्तर में पड़े पत्रिकाओं के स्टॉक को कौन ठिकाने लगायेगा ?

अनीस अहमद—खटीमा, नैनीताल : गरीब चन्द जी, आपकी हवेली ऊर्फ बिल दीवाना आफिस के किस कोने में है ?

उ० : सब कोनों में मेरे गेट हैं । बिल बनाने पर सीलिंग थोड़े ही लगा है ।

एस० बी० कृष्णा 'बालू भाई' माहेश्वरी—बरेली (उ०प्र०) : मैं अपनी शादी की दावत इनवाइट करना चाहता हूं । दावत बनाने वाले रसोइये, मेरी अपनी पालनू बिल्लियां हैं ।उनका विचार है कि दावत में आप लोगों की आमलेट बनाकर, आपको खिलाई जाये । कहिये आप आयेंगे या नहीं. इस दावत के बारे में आपकी क्या राय है ?

उ० : मैं दुल्हिन की तरफ से शरीक हो रहा हूं । जब आपकी बारात चिड़िया घर आयेगी तो वहीं मुलाकात होगी ।

मो० जहाँगीर—रांची (बिहार) : गरीब चन्द जी, गरीबी से पिछा छुड़ाने के लिए क्या करना चाहिए ?

उ० : उपाय तो कई हैं ! लेकिन सबसे सीधा नम्बर दो वाला है ।

मोहनलाल शर्मा—करनाल : गरीब चन्द जी, आपको देखकर मुझे पता नहीं क्या हो जाता है, आप ही कोई दवा का नाम बता दीजिये ?

उ० : आपका नाम मोहिनी शर्मा होता तो बता भी देता ।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मेरे सामने वाली खिड़की

आदिकाल से खिड़कियों ने रोमांस की दुनिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रेमी को खिड़की द्वारा ही प्रेमिका के दर्शन होते हैं। इसी खिड़की से प्रेम का आदान-प्रदान होता रहा है। स्पष्ट है कि विभि युगों की खिड़कियों की बनावटों ने प्रेम तरीकों पर गहरा प्रभाव डाला है। विषय पर हमारे शोध की एक रिपोर्ट



लैन्सैंट विंडो

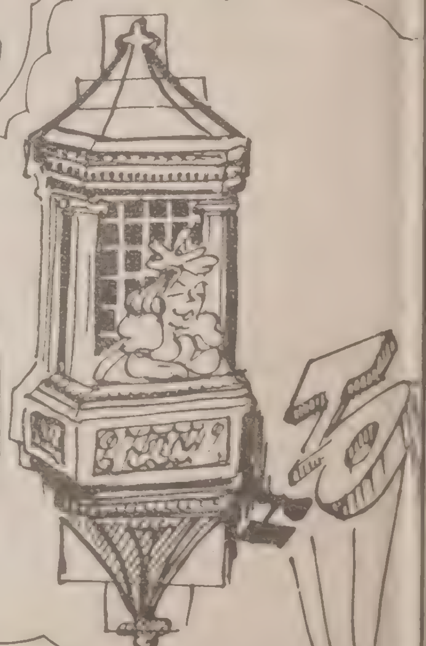
१३ वीं शताब्दी

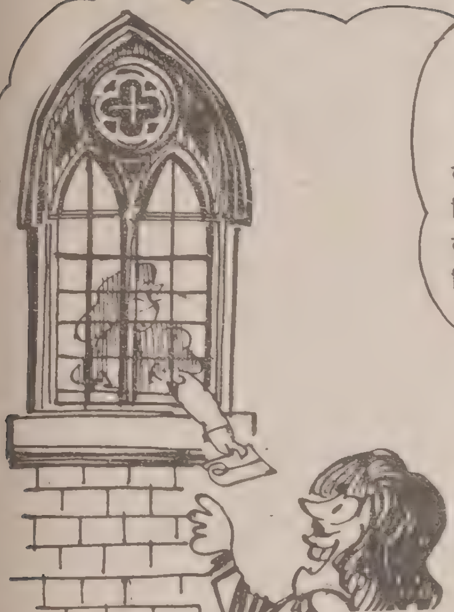
यह खिड़की बहुत गहरी व इतनी संक्र होती थी कि बॉक्स कैमरे का प्रभाव उत्प करती थी। बाहर से झांकने वाले को अन्दर व दृष्य नैगेटिव में दिखाई देता था। यही कार था कि मजनूं लैला जैसी काली लड़की से दि लगा बैठा। वह बाहर से अन्दर देख समझ रहा कि लैला गोरी है। वास्तव में वह उसव नैगेटिव बिम्ब था।

ओरियल विंडो

१६ वीं शताब्दी

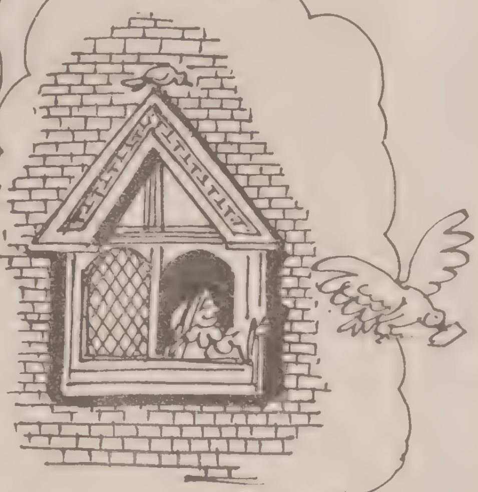
प्रंद्रहवी शताब्दी की खिड़की का डिज़ाइन देखिये। ऐसे ही है जैसे थियेटरों का बॉक्स होता है। इसी के प्रभाव में रोमियो जुलियेट टाइप के प्रेमी पैदा हुये। प्रेमिका खिड़की पर आकर बैठ जाती, प्रेमी नीचे से वायलन बजाकर सुनाता या गाना गाता। लड़कियां फ्री में बॉक्स आफ़िस एंटरटेनमैन्ट के मजे लेतीं।





रेखागणितीय बार ट्रेसरी
१४ वीं शताब्दी

इन खिड़कियों में धातु के बार इस प्रकार लगे होते थे कि अन्दर से केवल हाथ बाहर निकल सकता था। इस मज़बूरी ने प्रेमियों में लम्बे-२ लव लैटर लिख कर पकड़ाने का सिलसिला डाला।



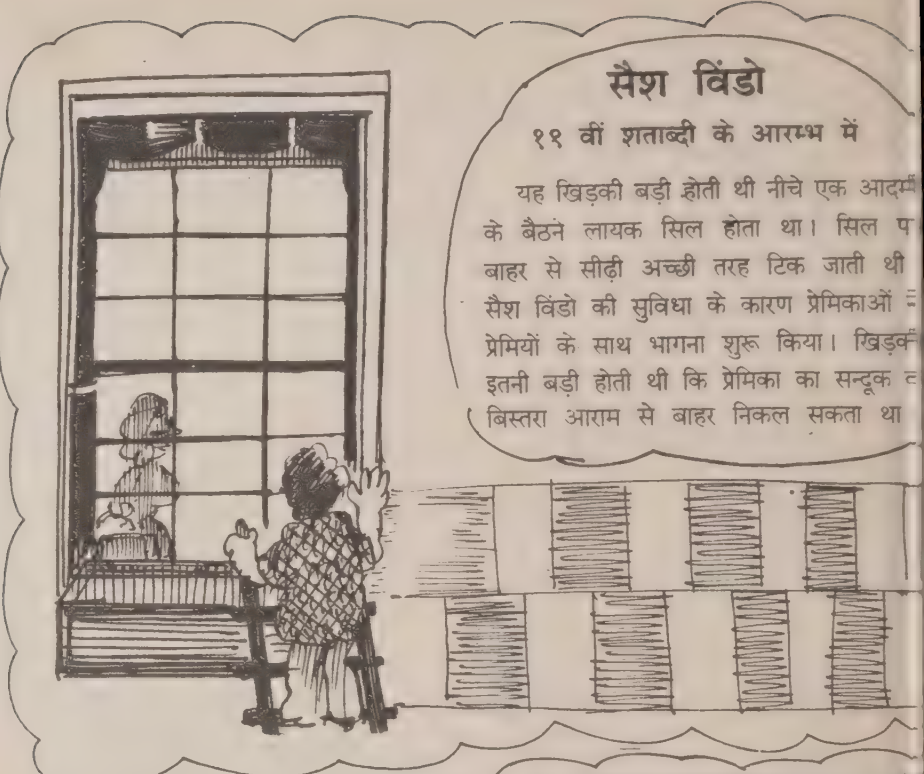
डार्मर विंडो
१८ वीं शताब्दी

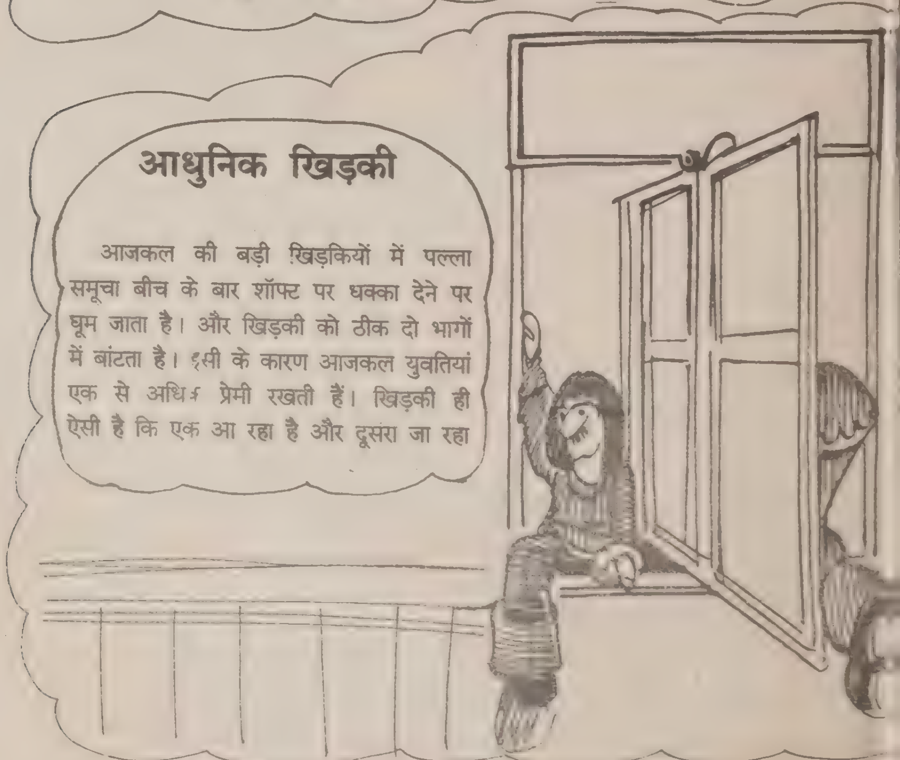
१८ वीं शदी में ऊपर छत्त वाली खिड़कियां लगीं तो ऊपर छत्तों पर कबूतर बैठने लगे तो प्रेमिकाओं ने कबूतरों द्वारा प्रेम सन्देश भेजने की परम्परा डाली। इस दौरान कबूतरों और डाक विभागों में खूब कम्पीटीशन रहा।



पैलेडियन विंडो
१८ वीं शताब्दी के अंत में

इस प्रकार की खिड़कियों में तीन भाग होते थे। बीच की मुख्य खिड़की व दोनों ओर छोटे झरोखे। नायिका बीच में खड़ी होती तो उसकी चमचियां अगल बगल में। इन चमचियों ने भी मौक़ा पाकर हीरो के चमचों से नैन-सैन मिलाने शुरू कर दिये। इसी खिड़की के प्रभाव वश अंत तक हीरोइन की चमचियां हीरो के चमचों से इश्क लड़ाती हैं। फिल्मों में भी यह टू-टीयर/थ्री टीयर प्रेम देखा जा सकता है।


सैश विंडो
१९ वीं शताब्दी के आरम्भ में
यह खिड़की बड़ी होती थी नीचे एक आदमी के बैठने लायक सिल होता था। सिल प बाहर से सीढ़ी अच्छी तरह टिक जाती थी सैश विंडो की सुविधा के कारण प्रेमिकाओं ने प्रेमियों के साथ भागना शुरू किया। खिड़की इतनी बड़ी होती थी कि प्रेमिका का सन्दूक व बिस्तरा आराम से बाहर निकल सकता था


आधुनिक खिड़की
आजकल की बड़ी खिड़कियों में पल्ला समूचा बीच के बार शॉफ्ट पर धक्का देने पर घूम जाता है। और खिड़की को ठीक दो भागों में बांटता है। इसी के कारण आजकल युवतियां एक से अधिक प्रेमी रखती हैं। खिड़की ही ऐसी है कि एक आ रहा है और दूसरा जा रहा

ाठ महीने तक बर्फ़ में दबा रहा ।

एक हवाई जहाज़ सन् १९४६ में ज़रलैंड में एक हिमनदी पर क्रैश होते मय उतर गया। इंजीनियरों के वायुयान तक ुंचने के पहले ही सर्दी बढ़ गई और युयान को पूर्णरूप से बर्फ़ निगल गई। गले वर्ष के मौसम में पहाड़ पर ढ़ने वालों ने इस वायुयान को बर्फ़ के नीचे बा हुआ पाया, उन्होंने किसी प्रकार फ्लाइट क खोल कर उसमें फोटो, मैंगजीन तथा र्टना के विषय में लिखे विवरण कैंपस्यूल सील कर उस में डाल दिये। हिम नदी ने बारा वायुयान को ढक दिया। वैज्ञानिकों ने नुमान लगाया है कि ये वायुयान धीरे-धीरे म नदी के साथ नीचे खिसकेगा और एक सा स्थान आ जायेगा जहाँ से ये पहाड़ के चे फिसल जायेगा और साबुत नीचे पहुँच ायेगा। इस कार्य में उनके अनुमान से गभग ६०० वर्ष लगेंगे।

आकाश का ये बूढ़ा बाबा डकोटा यान । जिसे पाइलैट तथा यात्री पिछले ४५ वर्ष विश्वासी तथा प्रेम का पात्र समझते आ हे हैं

जापानी

एक डकोटा यान ३,००० जापानी ालियाँ लगने पर भी होंगकोंग से उड़ कर ारत पहुँच गया था। दूसरा डकोटा न्यू गिनी र पैट्रोल के स्थान पर खाने के तेल से ड़ा। एक डकोटा यान नौरथ ईस्ट आइलैंड ाठ महीने तक बर्फ़ में दबे रहने के बाद क बार में ही स्टार्ट हो गया। एक और कोटा यान को दक्षिणी अफ़्रीका के एक घर ी छत से उतारा गया जहाँ वह बारह वर्ष क बारिश से घर की रक्षा करता रहा, फिर से साधारण सर्विस में लगा दिया गया।

डकोटा यान का जन्म सन् १९३३ के जून माह में हुआ था। इसमें बारह यात्री बैठ सकते थे। इसमें गैलरी तथा बाथरूम भी था।

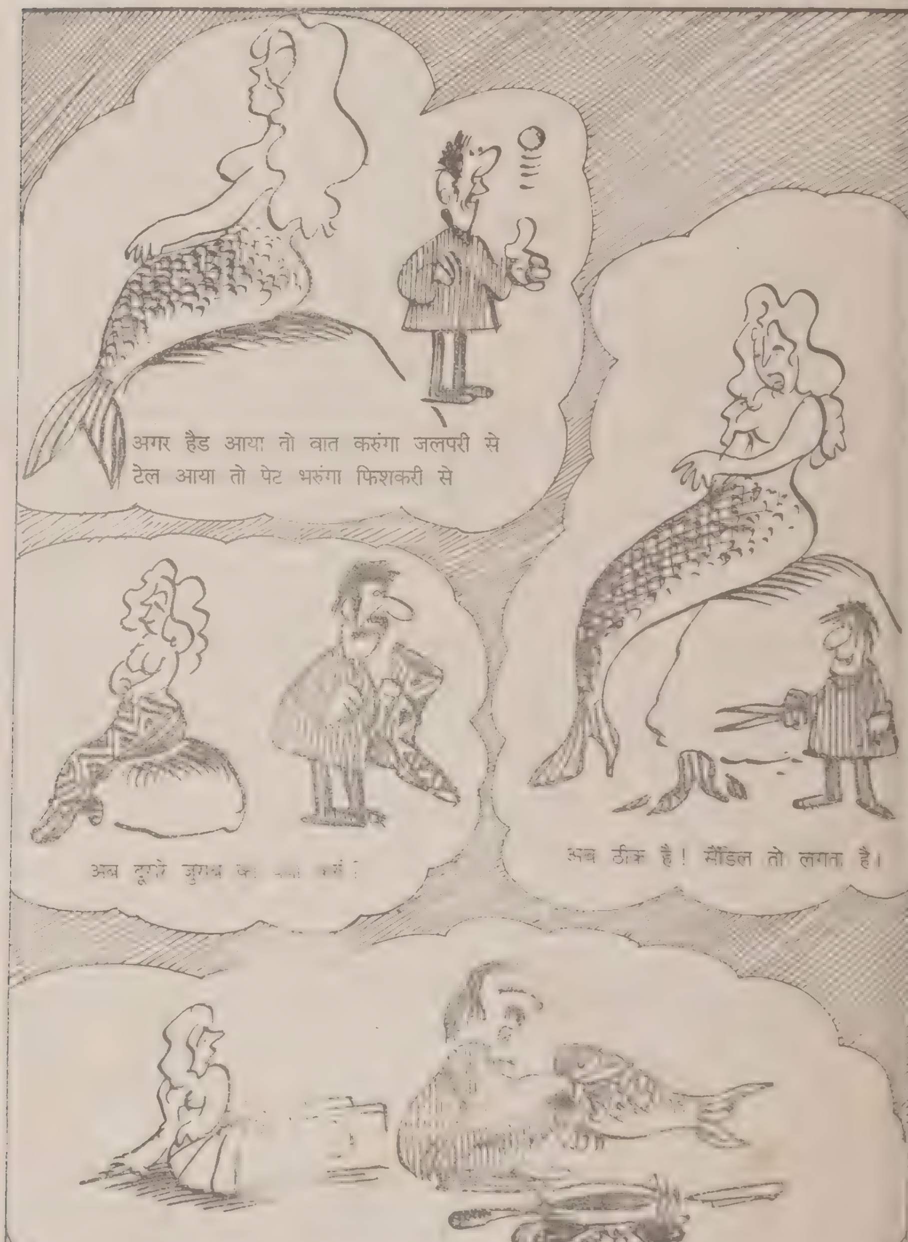
इसका सबसे पहला यात्री करोड़पति हावर्ड ह्ग्स था जिसने इसमें सबसे लम्बी यात्रा दुनिया की सैर की थी।

डकोटा यान ही लद्दाख में पहुँचने वाला सबसे पहली पहियों की सवारी थी। सबसे पहली जीप इसके बाद हवाई जहाज़ से वहाँ पहुँचाई गई थी। डकोटा ही लेह की पहाड़ी पट्टी पर २४ मई १९४८ को शान से उतरा था इसके सम्माननीय चालक ऐअर कमांडर मेहर सिंह थे जबकि विशिष्ट यात्री जनरल के.एस. थिमैया थे।

हवाई कम्पनियों का कहना है कि 'डकोटा' आधुनिक सब ही यात्री विमानों से अधिक भरोसेमंद तथा कम कीमत का है। ये सब से अधिक घंटे उड़ाया गया है, सबसे अधिक दूरियां इसने पार की हैं तथा सबसे अधिक यात्री तथा माल भी उड़ने के इतिहास में, डकोटा यान द्वारा ही ढोया गया है।



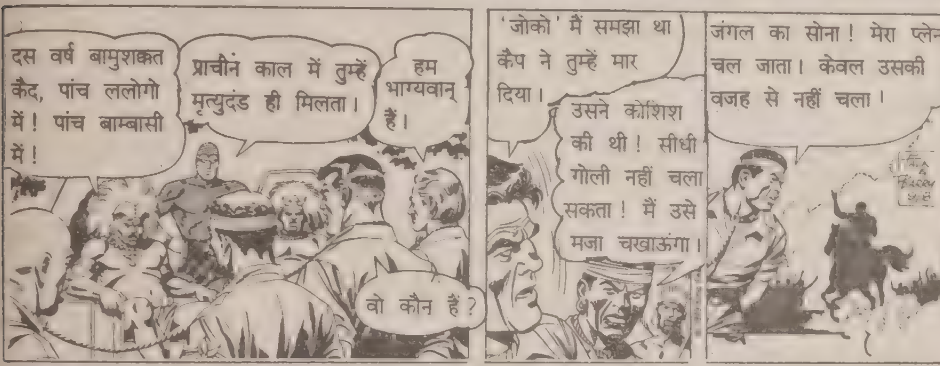
जलपरी की कहानी

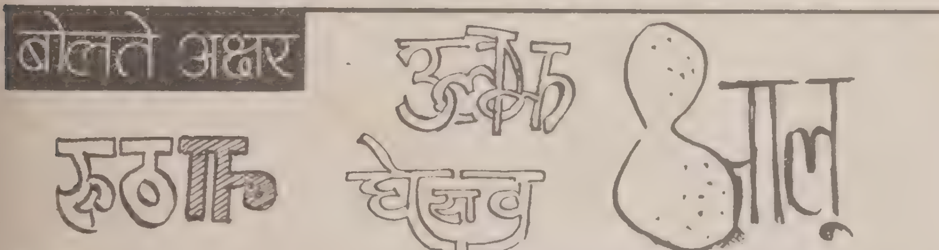

अगर हैड आया तो बात करुंगा जलपरी से
टेल आया तो पेट भरुंगा फिशकरी से
अब ठीक है! मॉडल तो लगता है।
अब दूसरे
कोई पूछे
एक हादसे में
चली गयी।


फैण्टम-जंगल शहर
वो मौत का चिन्ह तारपीडो के जबड़े पर जहां उस बदमाश ने उसे मारा था . . .वो दूसरे बक्सों के चिन्ह ? . . .
'जोको' ने क्या कहा था ?
'खोपड़ी का निशान' फैन्टम का चिन्ह, कभी भी नहीं हटता।
बक्सों पर फैन्टम के अच्छे चिन्ह मतलब फैन्टम की सुरक्षा में, चुराना सम्भव नहीं।
!!
उन बकवास चिन्हों की किसे परवाह है ! सोना तो अब भी यहां है।
तारपीडो उठो, वो बदमाश हमारी लूट का अपहरण करना चाहता है। अभी तक बेहोश !
वाओ ! वो आदमी जंगली सुअर के समान मारता है।
मैं उसे स्वयं ही खत्म कर दूंगा। फिर तारपीडो को ! सारा सोना मैं अपने आप ही ले लूंगा।
आदमी चिड़िया हमारे सोने के साथ।
FALK & BARRY 8/31
सुनो ! जो भी तुम हो ! समझौते का क्या ख्याल है ?
हम तारपीडो को मार देते हैं, मैं और तुम सोना बांट लेते हैं ? क्या ख्याल है ?
?!
तुम . . .जो बाहर हो ! मैं कह रहा हूं, तारपीडो को मार कर सोना आधा-आधा बांट लेते हैं। सुनते हो ?
मैं तुम्हें सुन रहा हूं ! दोहरे धोखेबाज़ !
!


मुझे मार दोगे, सोना उस बदमाश से बांटोगे। दोहरी चाल चलने वाले धोखेबाज।
उसे पकड़ने की एक चाल! वहां देखो तारपीडो!
!!
कैंप के गोली चलाने से पहले ही, फैन्टम पिस्तौल निकाल कर क्षण गुजरने से भी पहले गोली चला देता है।
!
और वो भागने लगते हैं।
!
फैन्टम सिर पर लड़ाई।
बिषैले बदमाश!
तुम्हें दंड मिलने में बहुत देर हो गई!
फैन्टम फैन्टम ...
बाम्बासी और ललोगो के लोगों तुम्हारा सोना आदमी चिड़िया पर है।
सारा यहां है.


फैन्टम ! बाम्बासी के लिये मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूं तुमने हमारा सोना बचा दिया।
मैं तुम्हारा ललोंगो के लिये धन्यवाद करता हूं। चलते फिरते भूत।
ये लोग तुम्हारे कैदी हैं मुझे विश्वास है तुम ठीक फैसला करोगे।
कोई संदेह न रक्खो !
ये बेवकूफ यहां क्यों उतरे ये उड़ कर दूर जा सकते थे
उनका पेट्रोल खत्म हो गया।
फैसला . . कल !


दस वर्ष बामुशक्कत कैद, पांच ललोगो में ! पांच बाम्बासी में !
प्राचीन काल में तुम्हें मृत्युदंड ही मिलता।
हम भाग्यवान् हैं।
वो कौन हैं ?
'जोको' मैं समझा था कैप ने तुम्हें मार दिया।
उसने कोशिश की थी ! सीधी गोली नहीं चला सकता ! मैं उसे मजा चखाऊंगा।
जंगल का सोना ! मेरा प्लेन चल जाता। केवल उसकी वजह से नहीं चला।


बोलते अक्षर
उल्का
रूठना
घेराव
आलू

दीवाना फ्रेंड्स क्लब



मकुन्द लाल सेठ, के ५३/९१ मध्यमेश्वर वाराणसी (यू.पी.), १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फिल्म देखना।



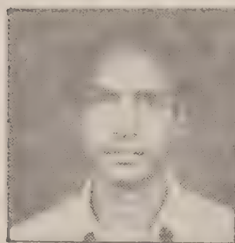
कैलाश भुसाल, पो० बा० नं० ७१५, काठमाण्डौ (नेपाल), १७ वर्ष, पौडी खेलना, फुटबाल खेलना।



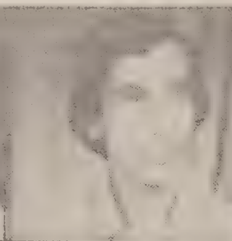
राधे श्याम पवांर, दाऊजी रोड बीकानेर, १८ वर्ष, पत्र व्यवहार करना, लम्बे सफर करना।



विवेक कुमार शुक्ल, ४३४ ए रेलवे कालोनी, कानपुर, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना।



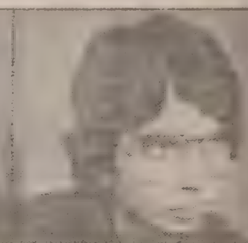
इकबाल हुसेन, मारयान गंज अमरावती, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, हाकी खेलना, सीनेमा जाना।



मुस्ताक मंसुरी "मासुम", ५. लार्डगंज जबलपुर - ४८२००२. (म.प्र.), १९ वर्ष, पत्र मित्रता, दीवाना पढ़ना, लेखन।



बृजकिशोर रावत, मु०पो० बुद्धवार, ललितपुर उ०प्र०, १७ वर्ष, पत्र मित्रता, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना।



पिताम्बर रवघूड़िया गुलाब, ३१, गुरु नानक मार्केट बीकानेर, २१ वर्ष, पत्र मित्रता करना, फरमाइश भेजना।



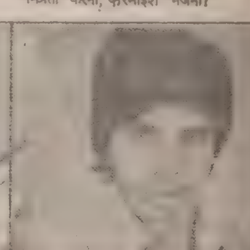
एम.- रफीक कादरी, हमालों का मोहल्ला, बीकानेर-३३४००१, २० वर्ष, फिल्मे देखना, अखबार पढ़ना।



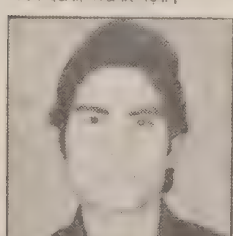
सुनील कुमार गुप्ता, ६/१६२ फाटक सूरजभान, बेलनगंज, आगरा-४, १८ वर्ष, कार चलाना, पत्र मित्रता।



मंजीत सिंह सलूजा, रेलवे कालोनी, पो० राजगांगपुर, १९ वर्ष, पत्र मित्रता, लेखन।



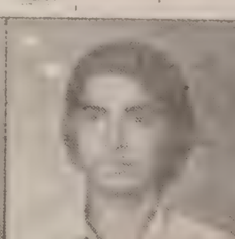
नारायण चक्रवर्ती 'प्रतीक', ९२१, नया बाजार नं० १, दमोह (म०प्र०) पिन-४७०६६१, १७ वर्ष, पत्र मित्रता।



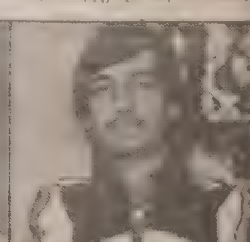
सुधाकर पाण्डेय, आदर्श छात्रावास शहडोल म०प्र०, १७ वर्ष, पढ़ना, फिल्में देखना।



राजकुमार रेम चंदनानी, एस.एफ.एक्स. १०५, गाँधी धाम, १८ वर्ष, क्रिकेट, दीवाना आदि पढ़ने का।



शकित कुमार गोयल, पवन बाक्स फैक्टरी, फील्ड गंज कूचा नः ७, लुधियाना, १७ वर्ष, फिल्में देखना।



जावेद खलील अहमद, बेहलम एस डि ओ कोटे के सामने फतेहपुर. १८ वर्ष, क्रिकेट वाली बाल खेलना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।



राजुल कुमार बंसल, एफ ११३/१४ शिवाजी नगर भोपाल-६ ११ वर्ष, टिकट संग्रह करना, कामिक्स पढ़ना।



सन्दीप वधवा "डिम्पी", वार्ड नः ४ गिदड़बाहा (पंजाब), १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, गाना सुनना।



मूलचन्द माहेश्वरी, जे २३४ दीपक मार्ग, आदर्श नगर जयपुर-४, १५ वर्ष, पत्र मित्रता बेडमिन्टन खेलना, घूमना।



पवनेन्द्र मित्तल, द्वारा श्री के. सी. गुप्ता, ५ ग ८, नाहरी का नाका, जयपुर, १९ वर्ष, बास्केटबाल खेलना, दीवाना पढ़ना।



बाल किशन, ३२, रेलवे स्टेडियम कालोनी गोरखपुर, १८ वर्ष, पत्र-मैत्री। डाक टिकट संग्रह।



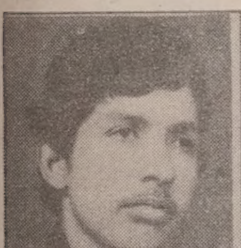
दीन दयाल शर्मा 'जोशी', द्वारा विकास स्टूडियो हॉस्पिटल रोड़ बीकानेर, २० वर्ष, पत्र-मैत्री, टिकट संग्रह।



गिरधारी लाल, बस स्टैण्ड, बालांगीर, उड़िसा, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, बैडमिंटन खेलना, कामेन्ट्री सुनना।



विजय बजाज द्वारा मदन लाल बजाज, क्लाथ मर्चैन्ट, बाघा बाजार, जलालाबाद-१५२०२४, १७ वर्ष



राकेश कुमार लायन, न्यू. जे. के. स्टूडियो सितारगंज नैनीताल, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना।



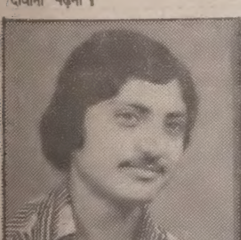
सुनील कुमार प्रताप, १४ गाँधी रोड देहरादून, १४½, वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, दोस्ती करना।



हरप्रीत सिंह टेखी, ४३, हवेली शाईदा, खरड़ (रोपड़), १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना और क्रिकेट खेलना।



राजीव रंजन "राही", द्वारा श्री बिसून राम, छाताबाद-५ नं० पो०ऑ० कतरास जिला धनबाद, १७ वर्ष, गाने गाना।



कन्हैयालाल लूलिया "सितारा", स्वागाहय फाईव स्टार रेडियो लि०, क्लब जहवार नगर रायपुर, १५ वर्ष।



ठाकुर अशोक सिंह 'प्रेम', घर नः १५-१०३, जाम नगर, हैदराबाद (आं०प्र०), १९ वर्ष, पेंटिंग करना।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंडस क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________________

पता ____________________

____

आयु ______ शौक ____________

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

पृष्ठ २५ से आगे

फेर दिया। फिर उसने 'चमकती आँख' उठा कर राजू की ओर बढ़ायी।

'इस देख कर बताओ, तुम्हें इसमें क्या दिखाई देता है?' राजू ने उसे उठा कर नजदीक से देखा, और सब भी उस के पास आ गये। एक क्षण तक उन्हें उसमें कोई विशेष बात दिखाई नहीं दी। फिर श्याम और राजू ने साथ-साथ देखा तलवार से मानक पर निशान पड़ गया है।

'मानक पर निशान पड़ा है, राजू बोला 'मुझ समझ नहीं आ रहा, मानक तो लोहे से सख्त होता है। लोंह से इस पर निशान नहीं पड़ना चाहिये।'

ओह! 'तीन बिन्दू' प्रसन्न दिखाई दिया। तो तुम इतने मूर्ख नहीं हो, जितने कि बन रहे थे। मैं तुम्हें मूर्ख नहीं समझ रहा था बल्कि एक अत्यन्त होशियार लड़का समझ रहा था। राजू ने ये सुन कर अपना होंठ दबाया क्योंकि उसने धोके से अपनी असलियत जाहिर कर दी थी। वह बोला अच्छा बताओ इस निशान का क्या अर्थ हुआ? राजू कुछ क्षण चुप रहा, वह मानक को ध्यान से देख रहा था। इस मानक पर निशान इस लिये पड़ा है क्योंकि ये असली मानक नहीं है. अन्त में वह बोला, ये तो पेस्ट से बना नकली मानक है। 'बिलकुल ठीक' तीन बिन्दू का स्वर तीखा था, ये पेस्ट से बना नकली मानक है, जो मैंने काली मूँछों वाले व्यक्ति से लिया है। असली 'चमकती आँख' का मानक अभी नहीं मिला है, क्योंकि वो अगस्टस की प्लास्टर प्रतिमा में छुपा है, प्रतिमाओं में कोई और अगस्टस प्रतिमा भी होगी जो बिक चुकी है। मैं उसको पाने में तुम्हारी सहायता पर भरोसा करे हुए हूँ'।

उसने रुक कर सब को एक पैनी दृष्टि डालकर भयभीत कर दिया।

"मैं तुम सब को उस प्रतिमा को ढूंढ़ने का हुक्म देता हूँ।" वह बोला, 'अन्यथा . . .परन्तु मैं धमकी देना नहीं चाहता। मेरे ख्याल से तुम मेरा मतलब समझ गये होगे। उस प्रतिमा का पता लगते ही मुझे टेलीफोन कर देना। इतना कहते-कहते वह प्रतीक्षा में खड़ी कार में बैठ कर चला गया। लड़के खड़े-खड़े एक दूसरे का मुँह ताकते रह गये।

उसने . . .उसने मानक लेने के लिये काली मूँछों वाले को मार दिया। महिन्दर बोला, "भगवान् उसे इतनी जल्दी ये कैसे पता चला कि मानक काली मूँछों वाले के पास है"?

क्रमशः

३३ का शेष

की लाल कणिकाओं को चढ़ाया जाता है। अनिमिया रोग में या तो रोगी के रक्त में लाल कणिकाओं की संख्या बहुत कम हो जाती है या उनके रक्त में हिमोग्लोबिन की मात्रा कम होती है।

जब किसी रोगी को रक्त चढ़ाया जाता है तो उसके रक्त के जैसा ही रक्त दिया जाता है। अधिक सुरक्षा के लिये दिया जाने वाला रक्त रोगी के रक्त के साथ टेस्ट किया जाता है। इस टेस्टिंग को 'क्रास मैचिंग' कहते हैं।

जमा किये हुए रक्त चढ़ाने का कार्य एक अमरीकन डाक्टर ओसवाल रोबर्टसन द्वारा आरम्भ किया गया था। उन्होंने कुछ समय पहले जमा किया रक्त सबसे पहले प्रथम महायुद्ध सन् १९१८ में युद्ध के घायलों का इलाज़ करने के लिये प्रयोग किया था। हम सब लोगों का एक सामाजिक कर्तव्य है कि रक्तदान दे कर दूसरों की सहायता करें।



दीवाना







हैलन

दीवाना

हैलन

● विजय भारद्वाज

हैलन के नृत्यों की तारीफ़ करना सूर्य को दीपक दिखाने समान होगा। यह एक ऐसी नर्तकी हैं जो दो सौ से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुकी हैं। इन फिल्मों में यह नायिका, सहनायिका से लेकर नर्तकी तक के रूप में दिखाई दी हैं।

हैलन को फिल्मी पर्दे पर लाने का श्रेय अभिनेत्री कुक्कु को है। वह स्वयं भी कुशल नर्तकी रहीं और अपने बाद हैलन के रूप में रूपहली पर्दे पर एक कुशल नर्तकी छोड़ गई। नर्तकी कुक्कु से कहीं ज्यादा ही हैलन ने लोकप्रियता हासिल की है।

हैलन का जन्म बर्मा में हुआ। दूसरे महायुद्ध के दौरान यह लड़की भारत आई। बहुत छोटी उम्र से ही इन्होंने फ़िल्मों में नृत्य करने आरम्भ कर दिये। सर्वप्रथम हैलन ने 'शबिस्तान' में नर्तकी की भूमिका निभाई। फिल्म 'मुजरिम' में उनकी सहायक भूमिका दर्शकों को बहुत पसन्द आई थी। इनका पूरा नाम हैलन रिचस है। २१ नवम्बर १९२८ को इनका जन्म रंगून में हुआ। सन् १९४६ में यह बम्बई आई। जूनियर कैम्ब्रिज तक इन्होंने शिक्षा प्राप्त की है। इनकी कुछ प्रसिद्ध फिल्मे हैं छूटे ऊटब, बारिश, हावड़ा ब्रिज, बॉयफ्रैंड, मार्डन गर्ल, नाच घर, गंगा जमुना, गंगा मईया तौह पिहरी चढइवों, कैप्टन शेरू, आया तूफान, आवारा बादल, बलमा बड़ा नादान, शिकारी, सुनहरी नागिन, ताजमहल, जग्गा, जहां आरा, ग्यारह हज़ार लड़कियां, हरक्लूस, चाचा चा, वह कौन थी, जिन्दगी, काबुली वाला, हम हिन्दुस्तानी, छोटे नवाब, नाचे नागिन बाजे बीन, डा० विद्या, खानदान, हवामहल, सिन्दबाद अलीबाबा अलादीन, ठाकुर जरनैल सिंह, ज्वेल थीफ़, ल्हू के दो रंग, आदि आदि . . .।

हैलन ने फिल्म दर्शकों को एक लम्बे समय से अपने जादू में कैद कर रखा है। उनके शरीर में नाचते समय ऐसे लगता है जैसे पारा भरा हुआ है। नृत्य चाहे कैसा भी क्यों न हो हैलन ने बखूबी से निभाया है।

हैलन के मुकाबले आज कितनी ही नर्तकियां मैदान में उतर आई हैं जिनमें जय श्री, टी. मीना टी. कल्पना अरचर, बिन्दु, प्रेमा नारायण वगैरह के नाम उल्लेखनीय हैं। लेकिन हैलन आज भी वर्षों पहले की तरह जवान हैं चंचल हैं और नृत्य में सफल। अपनी लम्बी उम्र की एक भी झलक हैलन ने अपने चेहरे पर प्रकट नहीं होने दी है।

सदाबहार अभिनेता देवानन्द की तरह हैलन ने भी अपने आप को खूब मेनहेन किया हुआ है। आज भी वह हर नर्तकी से टक्कर लेने की क्षमता रखती हैं। हैलन के साथ निर्देशकों को भी आसानी रहती हैं, क्योंकि यह 'रीटेक' बहुत ही ना के बराबर होने देती है।

अपने शारीरिक अनुपात, सुन्दरता और चंचलता को बनाये रखने का राज यह बताती हैं, ''मैं योगाभ्यास रोज़ाना करती हूँ, चिकनाई कम खाती हूँ। नशा करने की मुझे आदत नहीं। मैं रोज़ाना नृत्य का अभ्यास भी बराबर करती हूँ।

इनका पता है—

डेलफन हाउस
२७३, कार्टर रोड बान्द्रा,
बम्बई-४०००५०